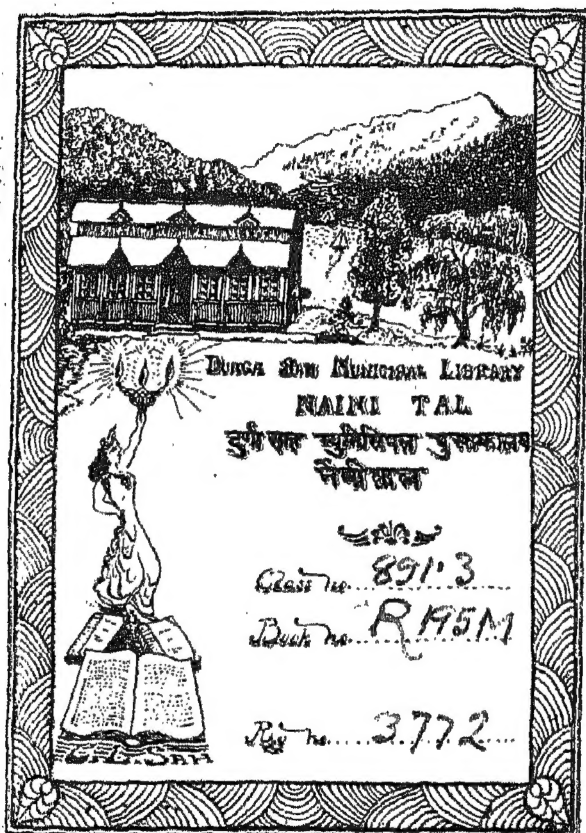

DURGA SAH MUNICIPAL LIBRARY
NAINI TAL
दुर्गासाह म्युनिसिपल पुस्तकालय
नैनीताल
Class No. 891.3
Book No. R 195 M
Reg. No. 3772

मूर्ति

ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह
"अवतार"

आर्मी एजूकेशनल स्टोर्ज़
अम्बाला

प्रकाशक :
स. अतर सिंह
आर्मी एजुकेशनल स्टोर्ज़, अम्बाला

पहला संस्करण १९३७
बारहवां संस्करण १९५४
मूल्य २।)

मुद्रक :
श्री प्रेम नाथ वर्मा
ट्रिब्यून प्रेस, अम्बाला ।

तारा

मूर्ति समान मेरी प्रिय बहिन जो आई चमकी
और चली गई और बन गई—

तारा

योल
१ ९ ५ ४

मूर्ति

"——यह दो ऐसे प्राणियों की आत्म कहानी है जो आपस में मिलना चाहते थे परन्तु उनके सिद्धान्तों में अन्तर होने के कारण वे मिल न सके।

वे मिले जुदा होने के लिए और जुदा हुए फिर मिलने के लिए।

उन प्राणियों की यह कहानी उनके ही शब्दों में लिखी गई है। उनकी ज़बान हिन्दोस्तानी थी और उन्हीं की भाषा में मैं उनकी जीवन-कथा उनके प्रेमियों के सामने पेश करता हूँ।

आशा है सब हिन्दोस्तानी भाई इसे स्वीकार करेंगे——"।

"अवतार"

प्राक्कथन

इस पुस्तक के लेखक नवयुवक हैं। अर्थात् उन में उत्साह और उद्वेग के साथ ही शोक की विह्वलता भी है, आशायें हैं और नैराशायें भी हैं। मैं ने इस उपन्यास को बड़ी रुचि से पढ़ा और ग्रंथकर्ता को उनकी सफलता पर बधाई देता हूं।

कलाकार अपने चित्त की प्रवृति को अपनी कला में स्पष्ट रूप से प्रकट करता है। जो भाव उसके हृदय में हैं, जो धारणायें उसके मस्तिष्क में हैं, उनका विकास उस की कला में होता है। जीवन की समस्यायें साधारण और असाधारण घटनायें, स्वाभाविक किन्तु मर्म-स्पर्शी परिस्थितियो यदि कला में स्थान पायें तो आश्चर्य क्या? कलाकार संसार से सीमित है, मनुष्य का जीवन उसकी कला का विषय है। प्रकृति की सुन्दरता अथवा प्रकृति की कठोरता से वह प्रभावित होता है। कला चिर-स्मर्णीय रहेगी अथवा क्षणिक—यह इस पर निर्भर है कि कला का विषय तातकालिक है। अथवा मानविक से उसका दृढ़ सम्बंध है। कुछ तो समस्यायें ऐसी हैं कि जिनका सुलझना मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर है—जो सदा से रही हैं और सदा रहेंगी—यथा, विरह, अकाल मृत्यु, सज्जन का कष्ट सहना, दरिद्रता इत्यादि।" दुःख संवेदना भैर्व रामें चैतन्य-यादितंम्।" राम का बनवास, सीता का हरण, सत्यवान की मृत्यु, दमयन्ती का विलाप—यह विषय ऐसे ह कि इन पर कला का प्रभाव नहीं पड़ता—हम जानते हैं कि अब भी, इस युग में भी, इतने वर्षों के पश्चात् भी कठोर विमाता के कहने से पिता अन्याय करता है। दुष्ट साध्वी को कष्ट देते हैं, अकस्मात् असमय पुरुष रत्न अशेष

गुणाकर का देहान्त हो जाता है। सुन्दरी युवावस्था में ही विधवा हो जाती है, गोद का बालक अनाथ हो जाता है; अयोग्य पुरुष प्रभुत्व प्राप्त कर लेता है, वर्षा समय सुहावना होता है, चन्द्रमा की ज्योति में शीतलता है और मेघ के गर्जन और विद्युलता में भय और आशंका और संघर्ष कारिणी शक्ति भरी हुई है। इन विषयों में कला सर्व कालीन रहती है। परन्तु यदि कलाकार इन सनातन विषयों को छोड़ कर किसी युग विशेष अथवा समाज विशेष के प्रश्नों पर विकास डालता है तो उसकी कला कुछ दिनों तक ही जीवित रहेगी, बहुत दिनों तक नहीं।

"मूर्ति" एक उपन्यास है—अर्थात् उसकी कथन कालपनिक है—इस के पात्र काल्पनिक हैं और इस का काल भी काल्पनिक है। इस में लेखक ने ऊपर कहे हुए दोनों प्रकार के विषयों का समावेश किया है। कमला और संतोष का प्रेम ; कमला का शोक, कमला का नितान्त आजन्म स्नेह ; कमला का सर्वस्व परित्याग, कमला के धार्मिक मार्ग में वैराग्य के पथ पर शान्ति की आशा ; वैराग्य में भी अदम्य प्रेम ; संतोष की समाज सेवा ; संतोष का आत्माभिमान ; संतोष का ध्येय के अनुशीलन में सांसारिक प्रतिष्ठा का बलिदान—ये उपन्यास के ऐसे अंश हैं जिन से इस के जीवित रहने की आशा की जा सकती है। हरिजनों के प्रति अत्याचार, ब्राह्मणों की संकीर्णता, पुलिस की अन्याय-परता—इत्यादि अंश से हैं जिन से आज के पाठकों का तो मनोरंजन अवश्य होगा, परन्तु कुछ काल के पश्चात् इन का महत्व केवल ऐतिहासिक ही हो कर रहेगा।

चरित्र चित्रण में ग्रंथ कर्ता सिद्धहस्त हैं। कुञ्ज बिहारी, कमला, संतोष और राजा साहब इन चारों का चित्र बड़ी कुशलता से खींचा गया है। पुस्तक पढ़ने पर भास होता है कि यह सभी अपने चिर परिचित मिलने वाले हैं।

प्रस्तावना लिखने वालों का बहुदा सिद्धान्त यह रहता है 'सायंद्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात्सत्यंम प्रियम् ।" परन्तु अन्त में मैं इतना कहना चाहता हूं कि कहीं २ पुस्तक की भाषा खटकती है । नासिक जिले के बिलासपुर गांव के, लोगों की भाषा ऐसी नहीं है—"सुसुरी जानत नाहीं रामदिनवा के बाप का" ।

अस्तु ! ग्रंथ करता पढ़े लिखे प्रगतिशील सज्जन हैं । हिन्दी साहित्य का सौभाग्य है कि ऐसे सज्जन जिनकी हिन्दी भाषा मातृ भाषा नहीं है और जिन को देश की सेवा और देश की रक्षा में साहित्यक संस्थाओं से दूर रहना पड़ता है इस प्रकार से योग्यता और तत्परता हिन्दी की सेवा कर रहे हैं ।

प्रयाग

अमरनाथ झा
वाईस चांसलर
इलाहाबाद यूनिवरसटी



By the same author:—

SOLDIER AND SOLDIERING IN INDIA **Rs. 5/-**

"Of absorbing interest".

—LIEUT. GENERAL SANT SINGH

GOC-in-C Eastern Command

"Extremely interesting and—if I may say so— admirably expressed."

—GENERAL GODWIN AUSTIN

ORGANISATION AND ADMINISTRATION IN THE INDIAN ARMY **Rs. 11/4**

"The author has succeeded in producing a comprehensive work of great value to regimental and to staff officers which deserves to achieve as wide a circulation at the classic which inspired it".

Journal of the Royal United Service Institute, London.

MANOKAMNA (Hindi Novel) **Rs. 2/12**

"I would like to compliment you on its excellence"

—MAJOR GENERAL S.P.P. THORAT

"I have no doubt that the stories in the volume will be appreciated".

—Dr. AMAR NATH JHA

ROADS TO GREATNESS **Rs. 1/8**

"Roads to greatness I think is admirable".

FIELD MARSHAL AUCHINLECK

"It is a most valuable production".

FIELD MRASHAL W. J. SLIM.

LAHORIYE (Hindi Novel) **2/8**

"Written in a very effective and illustrative manner".

—S. HARNAM SINGH M.A., Ph. D.

आँसुओं

की

दो बूँदें

प्रोफ़ेसर बद्रीनाथ ब्राह्मण कालेज काशी के प्रिंसिपल थे। बहुत विद्वान् और लायक। इनका एक इकलौता लड़का था—बिंदु—जिसको वे बहुत प्यार करते थे। इसके सिवा उनका घर में और कोई नहीं था। घर वाली को मरे कई वर्ष हो गये थे। बिन्दु को उन्होंने बड़ी मुश्किल से पाला था। वह भी अपने पिता से बहुत प्रेम करता था।

प्रति दिन प्रिंसिपल साहब बिन्दु को साथ लेकर कालेज के समीप वाली सड़क पर सैर करने जाया करते थे। आज भी सैर के लिए उन्होंने बिन्दु को आवाज दी लेकिन उसने इनकार कर दिया यह कह कर कि मैं खिलौने से खेल रहा हूँ। लेकिन प्रि० बद्रीनाथ न माने उन्होंने उसे मना लिया और सैर के लिए साथ लेकर चल दिए।

कालेज से कुछ दूर गए होंगे कि नटखट बिन्दु ने गेंद सड़क के दूसरी तरफ़ फेंक दी और फुर्ती से गेंद उठाने भागा। प्रिंसिपल साहब उसे पकड़ते ही रह गए। लेकिन वह सड़क के दूसरी तरफ़ पहुँच गया। गेंद उठा कर वह फिर वापस आने लगा कि पीछे से मोटर का हार्न बजा। प्रिंसिपल साहब ने चिल्ला कर कहा "इधर मत आओ" परन्तु वह सड़क के मध्य में पहुँच चुका था। मोटर बहुत करीब आ गई थी। सड़क पर एक भंगी गंदगी का टोकरा सिर पर उठाए और एक हाथ में अपने लड़के की उंगली पकड़े चला जा रहा था। उसने जल्दी से टोकरा फेंक दिया और तेजी से बिन्दु को बचाने लपका। परन्तु उन दोनों की मृत्यु आन पहुँची थी। ड्राइवर ने बहुत कोशिश की परन्तु कुछ बस न चला।

दो बेबस सड़क के दोनों तरफ़ खड़े दो लाश पड़ी देख कर रो दिये। एक के बुढ़ापे का सहारा और दूसरे के बचपन का सहारा न रहा। प्रि० बद्रीनाथ ने रोते हुए बालक को उठा अपने हृदय से लगा लिया। दोनों रो रहे थे। किसका दुख ज्यादा था मनुष्य प्रतीत नहीं कर सकता।

उप

देश

बीस वर्ष गुजर गये । सन्तोष ने एम० ए० की परीक्षा दी और कालेज में सर्व प्रथम रहा । सब उसे प्रि० बद्रीनाथ का लड़का समझते थे और प्रिंसिपल साहब ने उसे बिल्कुल बिन्दु की तरह पाला था । वे उसे कभी अपनी आँखों से दूर नहीं देख सकते थे ।

पिछले महीने से प्रिंसिपल साहब की दशा कुछ खराब रहती है । बुढ़ापे की वजह से बहुत कमजोर हो गये हैं । उन्होंने नौकरी से कुछ दिन हुए इस्तीफा दे दिया और आज ही पता चला कि कालेज कौंसिल ने उनकी जगह सन्तोष को फिलासफी का प्रोफेसर नियुक्त कर दिया है ।

शाम हो चली थी। सन्तोष ने कालेज से आकर किताबें मेज़ पर रक्खीं और प्रिन्सिपल साहब के कमरे में गया।

"कहिए पिता जी आप का जी कैसा है," सन्तोष ने पलंग पर बैठते हुए पूछा।

"अच्छा है बेटा। यह जान कर कि तुम्हें नौकरी मिल गई मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

"यह आप ही की कृपा है पिता जी।"

"मेरी नहीं भगवान् की है, बेटा। उसी के चरणों में मन लगाये रखना। तुम्हें हमेशा सफलता होगी।"

"सच है पिता जी।"

"तुम्हें वह दिन याद है जब हम दोनों पहली बार मिले थे।"

"बहुत अच्छी तरह।"

"तुममें कितना परिवर्तन आ गया है। अब तुम ब्राह्मण कालेज के विद्वान प्रोफैस्सर हो।"

"सच है पिता जी। सब कुछ बदल गया है परन्तु हृदय नहीं।"

"मतलब"

"मैं विद्वान हूं सच है। अब मैं ब्राह्मण कौलेज में प्रोफ़ेसर हूँ, सच है। दुनियां मुझको आपका पुत्र जानती है, यह सच न होते हुए भी सच है।"

"यह सच क्यों नहीं" पलंग से उठने की कोशिश करते हुए प्रिन्सिपल साहब ने पूछा।

"प्रीति और पालन पोषण के कार्य में आप मुझे अपने स्वर्गीय पिता से अधिक प्यारे हैं। परन्तु भगवान् का लिखा बदला नहीं जा सकता। मैं हमेशा————।"

"नहीं सन्तोष ।"

"क्यों नहीं पिता जी । आपही तो कहते थे कि सब मनुष्य एक हैं । जब बच्चा पैदा होता है तो उसमें कोई चिह्न नहीं होते, जिससे यह मालूम हो कि वह ऊंच या नीच है ।"

"यह सच है और इसी के सहारे मैंने तुम्हें पाला, परन्तु दुनिया बड़ी निष्ठुर है । पुराने रस्म-रिवाज उसे बुरी तरह जकड़े हुए हैं और जब तक वह तोड़े नहीं जाते हमें उन पर चलना पड़ता है ।"

"मैं उन्हें तोड़ूंगा ।"

"सन्तोष"

प्रोफ़ेसर साहब

प्रोफ़ेसर सन्तोष को कालेज के सब लड़के बहुत चाहते। ये हर एक से मिल जुल कर रहते और बड़ा दिल लगा कर काम करते। लड़कों ने ठीक ही उन्हें 'महात्मा जी' की पदवी दे दी थी। रोज सवेरे कालेज के पास वाले मन्दिर में वे पूजा करने जाते। उन्हें गाने का बहुत शौक था। रोज रात को दोस्त-मित्र इनके यहां इकट्ठे होते और यह बड़े मधुर राग में उन्हें परमात्मा की स्तुति सुनाते।

दुनियां इन्हें ब्राह्मण समझती थी। इनका हृदय ब्राह्मण की भांति पवित्र था। वे ईश्वर के भक्त थे—लेकिन वे जानते थे कि वे ब्राह्मण नहीं, नीच हैं। परन्तु दुनिया को बता नहीं सकते थे और फिर बताने से लाभ। क्या सब मित्र जो अब उन से इतना प्रेम करते हैं यह जान कर कि वे नीच हैं उन्हें भूल जाएंगे? क्या मित्रता में ऊंच

नीच है ? क्या हम किसी और जाति वाले से प्रेम नहीं कर सकते ? क्या प्रेम और मित्रता एक ही सीमा के अन्दर ही हो सकती है ? अगर नहीं—तो वे फिर दुनिया को क्यों नहीं बता देते कि वे नीच हैं।

दुनिया तुम पर थूकेंगी। सब तुम्हें दगाबाज़ कहेंगे। सब दोस्त तुम्हारे दुश्मन हो जाएंगे। तुम्हें एक भयंकर संसार में अपनी नैय्या को अकेले ही चलाना पड़ेगा। ऊंची लहरें उठेंगीं। उन लहरों में बड़े-बड़े बेड़े डूब जाते हैं। क्या तुम वह भयंकर लहर पार कर सकोगे ? और यदि पार भी कर सके तो उस किनारे पर तुम्हें क्या प्रतीत होगा—एक सुनसान दुनिया। जहां तुम्हें कोई नहीं जानता, जहां के सब निवासी गन्दे और अज्ञानी हैं—कौए अपने बीच में एक मोर को पा कर कांय कांय कर उसे मार डालते हैं। तुम्हारे ज्ञान से तुम्हारा ही नाश हो जाएगा। तुम उन्हें कुछ सिखा नहीं सकोगे। वे नीच हैं इसे अच्छी तरह से जानते हैं और इसी में प्रसन्न हैं। जब वे ही अपना अज्ञान और ग़रीबी दूर करने की कोई कोशिश नहीं करते तो तुम्हें क्या पड़ी है।

वे गरीब हैं, अज्ञानी हैं। दुनिया वाले उन्हें ठोकरें मारते हैं। वे इतना नीचे गिर गए हैं कि वे खुद नहीं उठ सकते। तुम्हें उनकी मदद करना होगा। गिरे हुए को उठाना मनुष्य का कर्त्तव्य है। और ये गिरे हुए तो तुम्हारे अपने ही हैं—क्या तुम उन्हें ठुकरा कर चले जाओगे ? क्या उन्हें भूख से रोता देख तुम्हें दया नहीं आएगी ? क्या उनकी आंसु भरी आंखें देख तुम्हें रोना नहीं आएगा ? अगर नहीं, तो तुम मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं हो और यह योग्यता जिस पर तुम्हें इतना अभिमान है बिल्कुल व्यर्थ है।

उठो ! इन गिरे हुओं की सहायता करो। यह सहायता करना तुम्हारा कर्त्तव्य है और कर्त्तव्य से डरने वाला कायर कहलाता है।

तुम लड़ो इन बेबस ग़रीब नीचों के लिए । उनके लिए लड़ो जिनका इस पापी संसार में कोई नहीं । जिन पर ऊँच जाति के लोग अनेकों प्रकार के अत्याचार करते हैं ।

जिनको कुत्तों की तरह रक्खा जाता है । जो दिन भर काम करने पर भी पेट भर रोटी नहीं पाते ।

तुम डर रहे हो । तुम्हें डर है कि इस तेज़ नदी में कूद कर बह न जाओ । आओ कूदो, अपना पूरा ज़ोर लगा कर पार करने की कोशिश करो । देखो शायद पार हो जाओ । अगर डूब गये तो तुम्हारी लाश किनारे पर लग कर सब को यह ज्ञान देगी कि तुम अपने कर्त्तव्य के लिए बलिदान हो गये । तुम दूसरों को एक रास्ता दिखा दोगे । एक ज्योति उठेगी और वह ज्योति सब संसार को प्रकाशित कर देगी । उस ज्योति का एक अङ्ग तुम होगे ।

जागो ! समय व्यतीत हुआ जा रहा है । यह अवसर हाथ से न जाने दो । अपना कर्त्तव्य करो ।

भि

खा

री

सन्तोष जल्दी से स्नान कर, कपड़े बदल मन्दिर को चल दिये। उनके दिमाग़ में रात्रि के सब विचार घूम रहे थे। उनको क्या करना चाहिये वे अभी नहीं सोच सके। उनका हृदय इस दुनिया को त्याग देने को करता था। उनके पास धन था, पदवी थी, ज्ञान था परन्तु हृदय में शान्ति न थी। शान्ति पाने के लिए मन्दिर की ओर जल्दी जल्दी चल दिये। मन्दिर में भजन कीर्तन हो रहे थे आज अमावस का दिन था। बड़ी भीड़ थी।

सीढ़ियों पर खड़े नीच मन्दिर में जाने वालों की तरफ़ आशा भरी नजरों से देख देख खुश हो रहे थे। वे इसी में प्रसन्न थे। कभी कभी छोटे बालक उतावले हो कर पूछ लेते "बापू तुम अन्दर क्यों नहीं चलते ?"

"नाहीं बेटा अस बात नाहीं कहा होत। वह हमरे लिए नहीं आय। वह बड़की देवी का मन्दिर है एहिमा हम नीच नाहीं जाय सकित"

"वहां का होय बापू ?"

"ए जानत मोरा सर। जा भाग जा पैसा मांग।"

लड़का दौड़ कर चला गया और पैसा लेने सन्तोष के पीछे पड़ गया।

"अरे लड़के मैं पूजा करने आया था पैसा नहीं लाया।"

"अरे बाबू जी तुम्हार लड़का जीवित रहे, तुम्हारी बड़ी-बड़ी उमर होवै, तुम्हार बहू बेटी बनी रहैं, तुम्हें बड़ी बड़ी नोकरी मिलै।"

"तुमसे कह तो दिया कि पैसा नहीं है फिर क्यों मेरा सर खा रहे हो," चिढ़ कर सन्तोष ने कहा।

"अरे बाबू जी मोंहका एक पैसा दे देव। तुमरी बड़ी उमर होय। हम तुमरा गुन गाएब। भगवान् करै तुमरी बड़े घर सरकार में सुनाई होय।" लड़के के बाप ने रास्ता रोकते हुए कहा।

सन्तोष खड़े हो गये। सोचने लगे यह अजब मुसीबत आ पड़ी है। इस बवाल से कैसे पीछा छुड़ाएं। उन्हों ने बुड्ढे से नम्रता से कहा "अरे भइया अगर पैसा होता तो दे देता। अब तो है नहीं।"

"तो कोई कपड़ा लत्ता ही दे देव। देखो भइया ठंड के मारे मरा जाइत है। तापन काजे ईंधन नाहीं है। जाड़ा तो हमका भी लागत है भइया। पर हमरी कोई सुनत नाहीं। तुम तो बड़े——।"

"नहीं नहीं" गुस्से से सन्तोष ने कहा।

वे नीच का हाथ पकड़ कर मन्दिर से घर को वापस चल दिये। अभी मोड़ घूमे ही थे कि कुन्जबिहारी ने पीछे से आवाज दी "सन्तोष ठहरो तुम से काम है।"

सन्तोष ठहर गये । कुञ्जबिहारी ने पास आकर कहा "मैं मन्दिर में तुम्हारी बाट देखता-देखता थक गया । तुम तो आज मन्दिर से बिना पूजा किये ही वापस आगये । क्या बात है ?"

"कुछ नहीं" बुड्ढे ने कहा । "बाबू जी के पास टूटा पैसा ना रहै मोका देने घरी लिए जात हैं ।"

"ले रे ! ले !!" दो पैसे देते हुए कुञ्जबिहारी ने कहा । "और इनका पीछा छोड़ ।"

वह सन्तोष का हाथ पकड़ मन्दिर की ओर वापस चल दिये ।

निश्चय

पूजा पाठ करने के बाद सन्तोष को साथ लेकर पुजारी कुञ्जबिहारी अपने घर की ओर चल दिये।

"देखो सन्तोष मैं तुमसे बहुत दिनों से एक बात कहना चाहता था। आशा है तुम मान जाओगे।"

"अगर मेरे योग्य हो तो अवश्य।"

"कोई कठिन समस्या तो है नहीं। परन्तु मेरे लिए बहुत जरूरी है। जब तुम्हारे पिता जीवित थे तब तो कोई मुश्किल नहीं पड़ती थी। परन्तु अब वे यह लोक छोड़ कर चले गये हैं। अब तो तुम्हीं से आशा हो सकती है। ईश्वर ने लायक पिता को लायक ही पुत्र दिया है।"

"परन्तु"

"मेरी इच्छा है कि तुम कमला———"।

"मैं कमला" हिचकिचाते हुए सन्तोष ने पूछा ।

"हां, कमला को इस साल एफ० ए० की परीक्षा देनी है । उसे एक मास्टर की आवश्यकता है, तुम्हारे अतिरिक्त और कोई मुझे नजर नहीं आता ।"

"यह प्रशंसा तो आप व्यर्थ कर रहे हैं । मैं इस योग्य नहीं हूँ ।"

"नहीं सन्तोष, तुम्हें मेरा कहना अवश्य मानना चाहिए । तुम जानते हो कि मैं उसे कालेज में भर्ती कर देता । लेकिन बहुत देर हो गई है । उसने बड़ी देर बाद परीक्षा में शामिल होने का निश्चय किया है । अब मेरे पीछे पड़ी रहती है कि मास्टर ला दो मास्टर । कहो क्या ख्याल है ?"

"जैसी आपकी इच्छा ।"

"मैंने तो पहिले ही कमला से कह दिया था । तुम पर मुझे बड़ा भरोसा था ।"

दोनों बातें करते २ पुजारी जी के द्वार तक पहुंचे ! इतने में भिखमंगों ने चारों ओर से उन्हें घेर लिया । एक ने पुजारी जी को छू लिया । पुजारी जी हरि ओ३म् ! हरि ओ३म् ! कहते हुए अन्दर भागे और चुल्लू भर पानी में जनेऊ डाल अपने ऊपर छिड़क लिया और नौकर से कहा "मार के भगा दो सालों को !"

"नहीं" जोर से सन्तोष ने कहा । "आप मन्दिर के पुजारी हैं और ऐसी बात आप को शोभा नहीं देती । इन गरीबों को आप क्यों पिटवाते हैं ?"

"देखो इन्होंने मुझे छू लिया है । अब मुझे फिर नहाना पड़ेगा ।"

"अच्छा आप नहाइये । मैं घर जा रहा हूं ।" कुछ गुस्से से सन्तोष ने कहा ।

"नहीं नहीं" सन्तोष की बाँह पकड़ते हुए पुजारी जी बोले । "तुम्हें अवश्य अन्दर चलना होगा और कमला से वक्त का फैसला करना होगा ।"

"परन्तु अब मैंने अपना निश्चय बदल दिया है । मैं कमला को नहीं पढ़ाऊंगा ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि मेरे पास समय नहीं है ।"

"देखो सन्तोष, तुमतो कभी झूठ नहीं बोलते ।"

"मैं अब भी झूठ नहीं बोल रहा । पहिले मेरे पास अवश्य समय था लेकिन अब मैंने अछूतों का उद्धार करने का निश्चय कर लिया है । इसलिए मेरे पास समय नहीं है ।"

"आप को मेरा कहना मानना होगा ।"

"नहीं"

"पिता जी मैं तो आपकी आशा करते-करते थक गई लेकिन आपकी बातें ही खतम नहीं होतीं ।" अन्दर से किसी मधुर स्वर ने कहा ।

"बेटा, तुम्हारे लिए एक प्रोफ़ेसर साहब को लाया था । परन्तु ये ड्योढ़ी पर आकर वापस चले जा रहे हैं ।"

कमला दौड़ती हुई बाहर आई और सन्तोष को प्रणाम कर पुजारी जी के पास खड़ी हो गई ।

"आप अन्दर क्यों नहीं चलते," मुस्कुराते हुए कमला ने सन्तोष से पूछा ।

"मुझे काम है ।"

"अच्छा पहिले अन्दर चलिए काम फिर होता रहेगा । आया है बहुत जरूरी नहीं होगा ।"

"नहीं नहीं पर——।"

क

म

ला

सन्तोष ने कमला को पढ़ाना शुरू कर दिया। वे हर शाम छः बजे के क़रीब पुजारी जी के घर जाते और एक घण्टा पढ़ा वापस आ जाते।

कालेज में इम्तिहान नजदीक आ गये। इसलिये काम ज्यादा हो गया। उधर कमला को पढ़ाना शुरू कर दिया था। इस बखेड़े में उन्हें अछूत उद्धार का निश्चय बिल्कुल भूल गया। जब कभी उन्हें उसका ध्यान आता तो वे यह कह कर कि इसके लिए अभी बड़ा समय है उसे भूल जाते।

पुजारी जी की गाड़ी सन्तोष को लेने के लिए आगाई। उन्होंने शहर से कुछ दूर एक छोटा सा मकान ले रक्खा था। आस-पास

कोई आबादी नहीं थी। हर ओर हरियाली देख आंखों को बड़ी शान्ति मिलती थी। सन्तोष ने किताबें उठा गाड़ी में प्रवेश किया और पुजारी जी के मकान की ओर चल दिये।

"प्रोफेसर साहब नमस्ते!" हंसते हुए कमला ने कहा।

"नमस्ते।"

"आज तो आप ने बड़ी देर लगा दी।"

"देरी नहीं। मैं तो उसी समय चल दिया था, जब तुम्हारी गाड़ी पहुंची।" गाड़ी से उतरते हुए सन्तोष ने कहा।

"आज तो मेरा दिल पढ़ने को नहीं करता। वह जो आप ने प्रश्न दिये थे अभी मैंने नहीं किये। कल करूँगी।"

"लेकिन।"

"मैं तो पहले ही जानती थी कि आप नाराज हो जाएंगे। परन्तु अब नाराज होने से क्या लाभ। आइये बाग में चलें।"

"नहीं अब तुम्हें पढ़ना नहीं है तो मैं वापस जाता हूं।"

"आप वापस नहीं जा सकते। आपको एक घण्टा यहां ठहरना होगा।"

"किस लिये।"

"क्योंकि आपको एक घन्टे की तन्ख्वाह मिलती है।" हंसते हुए कमला ने कहा।

"कमला मुझे इस नौकरी को छोड़ना पड़ेगा।"

"कैसे! मैं तो नहीं छोड़ने दूंगी। जनाब मुझको भी पता लग गया है कि आप दुनिया के किस कोने में रहते हैं। मैं वहां से आपको

(सन्तोष का नाक खींच कर) खींच लाऊंगी ।"

"कमला तुम बड़ी शैतान हो" कुछ झुंझला कर सन्तोष ने कहा ।

कमला दौड़ कर बाहर चली गई और दर्वाजे में खड़ी होकर बोली "आप गुस्सा शान्त करें मैं अभी आती हूं ।"

सन्तोष आराम कुर्सी पर टागें रख कर कुछ सोचने लगे । परन्तु वहीं बैठे बैठे नींद आगई ।

डुबा

डुबौवल

कमला दौड़ कर बाग में गई। उसे आशा थी कि सन्तोष ज़रूर उसका पीछा करेंगे। परन्तु वह नहीं आये। कुछ इधर-उधर घूम कर वापस आई तो देखा कि सन्तोष मेज पर पैर रक्खे सो रहे हैं।

कमला ने झट पैन्सिल दवात में डाल प्रोफ़ेसर साहब के मुंह पर चित्रकारी आरम्भ कर दी। कुछ मिनटों में उनका मुख ऐसा लगने लगा जैसे रामलीला में काले लंगूरों का। कमला दौड़ कर दूसरे कमरे में गई और अपने ड्रेसिंग टेबल से छोटा शीसा उठा लाई। उसने उसे सन्तोष के आगे रख दिया। फिर एक कागज की बत्ती बना उसे धीरे धीरे सन्तोष के कान में डालना शुरू कर दिया। वह समझे, मक्खी है।

हाथ उठा कर एक चाँटा मुंह पर मारा। परन्तु कमला ने बत्ती पहिले ही निकाल ली। कुछ हाथ में नहीं आया। कमला की थोड़ी सी हंसी निकल गई लेकिन सन्तोष जागे नहीं। फिर थोड़ी देर बाद उसने वह बत्ती सन्तोष की नाक में डालीं। छींक मारते ही उनकी नींद खुल गई। जब उनकी दृष्टि शीशे में पड़ी तो वे भौचक्के से रह गये। सोचने लगे यह क्या देख रहा हूँ। कुछ समझ में नहीं आया। कमला से अब रहा नहीं गया और वह जोर से हँस पड़ी। सन्तोष सब कारस्तानी समझ गये।

"तुम बहुत नटखट हो कमला।"

"आहा! सन्तोष" हंसते हुए कमला ने कहा। "मैंने तो आप से सोने के लिए नहीं कहा था।"

"सोता न तो क्या। तुमतो चली गई थीं।"

"तभी तो आकर जगा दिया। धन्यवाद दीजिये, शुक्रिया कीजिये। थैंक यू कहने की जगह आप मुझे नटखट बताने लगे।"

"नटखट नहीं तो क्या? आज होली तो है नहीं।"

"शायद" हंसते हुए कमला ने कहा।

"अच्छा अब मुझे हाथ मुँह तो धो लेने दो।"

"आइये" बाहर की तरफ संकेत करते हुए कमला ने कहा।

कमला सन्तोष को बाग में ले गई। और वहां नहाने के तालाब की ओर संकेत करके बोली "जाइये मुंह हाथ धो लीजिये।"

सन्तोष मुंह हाथ धोने लगे। नटखट कमला ने धीरे-धीरे उनकी तरफ़ बढ़ना शुरू कर दिया। पानी में सन्तोष को कमला की परछांई नज़र आई और वे फौरन ताड़ गए कि क्या आने वाला है। कमला बहुत नज़दीक आ गई थी। उसने तेजी से बढ़ कर धक्का देना चाहा। परन्तु सन्तोष पहले ही चौकन्ने बठे थे। एक तरफ़ हट गये और कमला

छपाक से तालाब में गिर पड़ी । दो चार डुबकियाँ लेने के बाद उसने अपना सिर पानी के बाहर निकाला ।

"मुझे बाहर निकालिये पानी बहुत ठण्डा है ।" बांहें बढ़ाते हुए कमला ने कहा ।

"मैंने तो तुमसे उसमें गिरने के लिए नहीं कहा था । शायद बहुत दिनों से स्नान नहीं किया ।"

"परन्तु मैं डूब जाऊंगी" और उसने झूठ-मूठ एक डुबकी लगाई ।

"अच्छा" कह कर सन्तोष ने कमला का हाथ पकड़ उसे बाहर निकालना चाहा । कमला को तो शरारत सूझी थी । ऐसा झटका मारा कि मास्टर जी सीधे तालाब में आरहे । कमला जल्दी से बाहर निकल आई और जब सन्तोष किनारे पर हाथ लगा बाहर निकलने की कोशिश करते तो उन्हें थोड़ा सा धक्का दे देती ।

कुछ देर बाद सन्तोष खीज गए । उन्हें कहीं जाना था । कपड़े सूखने में भी कुछ देर लगेगी । उन्हों ने बड़ी नम्रता से कहा "कमला मुझे देर हो रही है ।

कमला हंस दी ।

"अगर मुझे तंग करोगी तो मैं पढ़ाने नहीं आऊंगा ।"

"मुल्लां की दौड़ मस्जिद तक ।"

"नहीं मानोगी ।"

"अच्छा कहिए तौबा ।"

"नहीं मैं तौबा नहीं कहूंगा ।"

"तब तक मैं निकलने नहीं दूंगी ।"

"लो बाबा, तौबा"

ना रा ज़ गी

"कमला" धीरे से सन्तोष ने कहा ।

"जी" जल्दी से कमला ने घर से निकल और सन्तोष को प्रणाम कर कमरे में आने का संकेत किया । दोनों चुप थे । आखिर कमला ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा "आप आही गये ।"

"आता न तो क्या । तुम्हारा इम्तिहान जो बहुत करीब आ गया है । अगर असफल हुईं तो पुजारी जी मुझे कोसेंगे ।"

"ओ हो ! अब पता लगा कि आप मुझे इम्तिहान पास कराने आए हैं ।"

"निश्चय तो ऐसा ही है । अच्छा बताओ कल का लैसन याद किया है कि नहीं ।"

"नहीं"

"ऐसे तो काम नहीं चलेगा। अगर तुम सबक़ याद न करोगी तो......।"

बात काटते हुए कमला ने कहा "तो फ़ेल हो जाऊंगी।"

"और क्या ऐसे पास होओगी।"

"तो अगले साल इम्तिहान दे दूंगी।"

"इरादा तो बहुत ऊंचा है इसलिए आपको जरूर ऐसा ही करना चाहिए। और इसको सफल करने के लिए मैं बाधा नहीं दूंगा। बल्कि कुछ और आसान किये देता हूं। पुजारी जी से कह दीजियेगा कि मैं कल से नहीं आऊंगा।" और जाने का बहाना करते हुए सन्तोष दरवाज़े की तरफ़ बढ़े।

कमला ने उनकी बाँह पकड़ ली और मुस्कुराते हुए कहा "फिर वही गुस्सा। क्या आपको मालूम है कि मैंने फेल होने का निश्चय क्यों किया?"

"नहीं"

"ताकि आप अगले साल भी मुझे पढ़ाते रहें।"

"यह बात है। देखो कमला यह तुम ठीक नहीं कर रही हो। तुम्हें पढ़ने में मन लगाना चाहिए।"

"यह कोई अपने बस की बात तो है नहीं।"

"तो पढ़ना छोड़ दो।"

"कभी-कभी सोचती हूं, छोड़ दूं। परन्तु फिर आप का ख्याल आ जाता है। शायद आपको कोई और नौकरी न मिले।"

अब तो सन्तोष का पारा चढ़ गया । जरा झल्ला कर बोले "तो यह सब मुझ पर दया हो रही है । आपकी ट्यूशन के बिना मेरा पेट नहीं पलेगा ।"

"पेट तो शायद पल जाय परन्तु दिल नहीं ।" मुस्कराते हुए कमला ने कहा ।

"कमला तुम बहुत शरीर हो । मेरा कहना नहीं मानोगी तो मुझे सारी बातें पुजारी जी से साफ़-साफ़ कह देनी पड़ेंगी ।"

प्रेम

प्रोफ़ेसर संतोष कुमार को कमला को पढ़ाते करीब छः महीने हो गये। कमला उनसे प्रेम करती थी और जिस समय वे उसे पढ़ाने आते वह उनसे हंसी खेल करना चाहती। परन्तु संतोष चाहते थे उसे पढ़ाना। कमला को सबक़ तो क्या पढ़ाते खुद ही पढ़ने लग गये।

इससे पहिले उनके हृदय में कभी ऐसा आन्दोलन नहीं हुआ था। उन्हें अपने में एक अजीब परिवर्तन अनुभव हो रहा था। किताब छोड़ कमला से हंसना और खेलना चाहते थे। जिस समय वह उनके सामने आ जाती संतोष का हृदय कमल की न्याईं खिल जाता। परन्तु वे अपनी इस नयी खिली कली को भविष्य की कल्पना के बड़े २ पत्तों से ढांक देते जिस से सिवाय उनके, उस सुगन्धित फूल की महक कोई और नहीं पा सकता था।

वे कमला से प्रेम करते थ। उन्हों ने इससे पहिले कभी किसी से प्रेम नहीं किया था। कमला उनकी नजर में देवी के समान थी।

क्या वे इस देवी के पाने योग्य हैं ? क्या कमला यह जान कर कि वे कौन हैं उन से उसी तरह प्रेम करती रहेगी ?

ईश्वर हर एक के लिए है। हर मनुष्य उसकी पूजा कर सकता है। पूजा होती है प्रेम से, प्रेम जाति-पांति से कोई रिश्ता नहीं रखता। प्रेम में कोई ऊंच-नीच नहीं होता। स्त्री मनुष्य का प्रेम जीवन के लिए उतना ही जरूरी है जितना आत्मा के लिए ईश्वर का प्रेम।

तो फिर हमारे प्रेम में कोई बाधा क्यों हो। कमला मुझसे प्रेम करती है और मैं उससे।

संतोष तुम विश्वासघाती हो। तुम अपना कर्त्तव्य नहीं निभा रहे हो। तुम एक मित्र के विश्वास का अपमान कर रहे हो। जिस तरह गुलाब छिपा नहीं रह सकता क्योंकि उसकी मधुर सुगन्ध घनी झाड़ियों के अन्दर से आ जाती है उसी भांति सचाई कागज के फूलों से छिपाई नहीं जा सकती। गुलाब का फूल मुरझा कर गिर जाता है। उसकी खुशबू भी मिट जाती है लेकिन सचाई कभी नहीं मिटती। वह लोहे पर लकीर की भांति हमेशा कायम रहती है।

संतोष तुम नीच हो। यह अवश्य एक दिन-दुनियाँ पर प्रकट हो जायगा। फिर जब दुनिया तुम्हें नीच कहेगी, कोसेगी, लताड़ेगी तो तुम उसे सह नहीं सकोगे।

मैं नीच हूं। सच है। परन्तु इससे दुनियाँ को क्या वास्ता। मेरा हृदय है। उसमें प्रेम है। क्या मुझसे ज्यादा कोई कमला से प्रेम कर सकता है और फिर वह मुझसे प्रेम करती है। तो फिर हम दोनों प्रेमी मिल क्यों नहीं सकते ?

नहीं ! संतोष नहीं !! तुम यह गलत सोच रहे हो । तुम कमला के प्रेम में पागल हो गए हो । इस पागलपन का बुरा नतीजा होगा । तुम कमला को अवश्य प्रेम करते हो । परन्तु इस प्रेम से क्या लाभ ? आदमी को उतनी ही छलांग मारना चाहिए जितना वह कूद सके । कमला तुम्हें प्रेम करती है । परन्तु वह यह जान कर कि तुमने उससे विश्वासघात किया है तुमसे घृणा करेगी । वह तुम्हें बुरा भला कहेगी । उसकी नजर में जो तुम्हारा चित्र बना हुआ है वह बिगड़ जायगा । उसके कोमल हृदय को बड़ी ठेस पहुँचेगी और शायद वह यह चोट सह न सके । कमला को दुःखी देख तुम सुखी नहीं हो सकोगे । तुम पुरुष हो । दुःख सह लोगे ।

भूलो नहीं ! अभी तुम्हारा पहिला निश्चय भी पूरा नहीं हुआ । तुम्हें दुनिया से प्रेम करना है । एक से नहीं । अगर तुम कमला ही से प्रेम करोगे तो उस प्रेम में तुम सब दुखियों को भूल जाओगे । तुम्हारे नीच भाई बहन रोते रह जाएंगे । बहुत समय गुजरने पर जवानी की हवा उड़ जाएगी । और मानव प्रेम की ज्वाला मधम पड़ जायगी तब तुम्हें अपनी भूल नजर आएगी । परन्तु तब तुम सिवा रोने के कुछ न कर सकोगे । गुजरा हुआ समय वापस नहीं आता । तुम इस कमला से जिससे अब प्रेम करते हो घृणा करोगे ।

उसे भूल जाओ ।

आँख मिचौनी

संतोष ने निश्चय कर लिया कि अब वे कमला को पढ़ाने न जायेंगे। वे बरामदे में कुर्सी डाल कर बैठ गए। जैसे २ समय व्यतीत हो रहा था उनका हृदय भी कमला को देखने के लिए व्याकुल होता जा रहा था। उनकी आंखें कमला को देखने के लिए चंचल हो रहीं थीं।

टमटम वक्त पर आ गयी। संतोष ने सोचा चलो आज चलें कल से नहीं जाएंगे। फिर हृदय पर पत्थर रख उन्हों ने कोचवान से कह दिया कि जाओ कह दो आज से पढ़ाने न आएंगे।

कोचवान सलाम कर चला गया। कमला बरामदे में बैठी उपन्यास पढ़ रही थी। पास ही किताबें पड़ी थीं। दिल तो उपन्यास में भी नहीं था। घड़ी घड़ी सड़क पर नजर जाती और हर गाड़ी तांगे की आवाज सुन वह चौंक उठती।

उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रीतम आ गये । उसका हृदय उछलने लगा । उसने हाथ बढ़ा उन्हें गले से लगाना चाहा परन्तु उन्होंने हाथ हिला पीछे हटना शुरू कर दिया । वह आगे बढ़ी वे तेजी से पीछे हट गये । समुद्र का किनारा नजदीक था । बड़ी २ लहरें उठ कर उस ऊंचे किनारे से टकरा रही थीं उसने उन्हें पकड़ना चाहा । वह रोई, चिल्लाई परन्तु वे हाथ हिलाते हुए पीछे ही हटते गये ।

गाड़ी की घन्टी बजी और कमला चौंक कर कुर्सी पर बैठ गई । उसने सोचा कि आज गाड़ी से उतरते ही उन्हें अपने हृदय से लगा लूंगी । परन्तु नहीं । भारत की स्त्री इतनी निर्लज्ज नहीं है । उसमें मान है । उसे अपने हृदय पर बड़ा काबू है । फिर मैं क्या करूँ ? वह सोचती ही रही परन्तु संतोश गाड़ी से नहीं उतरे । कोचवान ने गाड़ी से उतर कर कहा ।"बिटिया तुम्हार मास्टर कहत रहें कि हम न आएब ।"

"क्यों" ?

"ये तो हम जानत नाहीं । हम से तो इतना ही कहे रहेन सो हम तोहार सामने कह दीन्ह ।"

"अच्छा चलो मैं तुम्हारे साथ चलती हूँ ।"

कमला उसी दम गाड़ी में बैठ संतोष के यहां पहुँची । संतोष सोच में पड़े आँखें बन्द किये कुर्सी पर बैठे थे । कमला धीरे २ उनके पास जा पहुंची । उनको कुछ पता न चला । जल्दी से दोनों हाथों से उनकी आँखें मूंद लीं । संतोष चौंक पड़े । उनके दिल में एक तूफान सा उठा । खुशी का, प्रेम का । कमला के नर्म-नर्म हाथ उनके माथे को सहला रहे थे । उन्होंने आँखें खोलने का प्रयत्न नहीं किया । वह चाहते थे कि इसी भाँति आँखें बन्द किये लेटे रहें । जब आँखें खुलेंगी तो भयंकर दुनिया देख कर उन्हें दुःख होगा । उन्होंने धीरे से कमला के हाथों को अपने हाथों में ले लिया । हाथ पर हाथ रखते ही उनके शरीर में बिजली सी दौड़

गई । वे चाहते थे कि उन कोमल हाथों को जोर से दबाये रक्खें ताकि छूट न जायें ।

उन्हें ऐसा अनुभव हो रहा था कि एक किश्ती में वे दोनों बैठे इस भयंकर संसार रूपी सागर को पार करने की चेष्टा कर रहे हैं । व दोनों दुःख और सुख के साथी है । उस दुःख में प्रेम था और उस प्रेम में आशा । उस आशा के सहारे वे जल्दी ही इस समुद्र को पार कर जाएंगे । फिर उस किनारे पर पहुँच सुख और शांति से जीवन व्यतीत करेंगे । कोई उनके प्रेम में बाधा नहीं देगा ।

संतोष भूल न जाओ । तुम्हारी ही नैय्या के साथ बहुत से अनाथ, दुःखी, और सताए हुए अछूतों की आशाएँ बंधी हुई हैं । उनका बोझ तुम्हारी नैय्या को रोक रहा है । वह इतनी भारी हो गई है कि आगे बढ़ना कठिन है । कमला के प्रेम का बोझ उसे बिल्कुल डुबो देगा ।

तुम्हें एक ऐसे नाविक की जरूरत है जिसका अपना कुछ बोझ न हो । परन्तु जिसकी शक्ति से यह नैय्या दूसरे किनारे लग जाए । वह पतवार, वह खेवनहार है तुम्हारा "निश्चय" उसी पर टिको । वह तुम्हें दूसरे किनारे लगा देगा ।

प्रेम के तूफान में पड़ तुम्हारी नैय्या डूब जायगी । एक पक्का इरादा कर लो और उस पर तुले रहो ।

"कौन !" धीरे से कमला ने संतोष के कान में कहा ।

आठ

सपाट

सामने पड़ी हुई कुर्सी पर कमला बैठ गई । संतोष आँखें बन्द किये लेटे रहे । मनुष्य सूरज की ओर आँखें उठा कर देखता है परन्तु उसकी चमक से तिलमिला कर आँखें बन्द कर लेता है और फिर अपना हठ पूरा करने का साहस नहीं करता । संतोष को डर था कि वे कमला का अलौकिक मुख देख कर अपना निश्चय भूल जायंगे ।

"यह भी खूब तमाशा है कि किसी के यहां कोई आये तो दूसरा आँखें बन्द किये ही पड़ा रहे । यह आपने कौन सी किताब में पढ़ा है ?"

"मैं खुद नहीं जानता" बिना आँखें खोले संतोष ने कहा ।

"आज आप पढ़ाने क्यों नहीं आए ?"

संतोष चुप रहे । क्या जवाब देते । कमला ने पूछा "क्या तबियत कुछ खराब है ?"

संतोष ने सिर हिला दिया ।

"यह तो बताइये कि आप पत्थर की मूर्ति की तरह क्यों बैठे हैं ?"

"पत्थर की मूर्ति," हँसते हुए संतोष ने कहा ।

"और क्या ! न बात करते हैं न कुछ !"

"कमला तुम किस मूर्ति से प्रेम करती हो," ज़रा गंभीरता से संतोष ने पूछा ।

"मैं किसी मूर्ति ऊर्ति से प्रेम नहीं करती । मैं ईश्वर से प्रेम करती हूं ।"

"सच है । सभी ईश्वर से प्रेम करते हैं । परन्तु मनुष्य का हृदय इतना चञ्चल है कि वह भगवान् से सीधा हृदय नहीं लगा सकता । जिस तरह अपनी मन्ज़िल पर पहुंचने के लिए तुम्हें कई पड़ाव आते हैं जिस तरह एक चित्रकार को अपना कौशल दिखाने के लिए एक मॉडल की जरूरत होती है उसी भाँति मनुष्य को अपना हृदय स्थिर रखने के लिए एक मूर्ति की आवश्यकता होती है । वह उसके द्वारा अपना हृदय ईश्वर भक्ति में लगा सकता है ।"

"शायद" सोचते हुए कमला ने कहा । "मुझे मूर्ति पूजा की फिलासफ़ी तो आती नहीं । परन्तु जब से मैंने होश संभाला रोज़ पिता जी के साथ राधा जी के मन्दिर में जाती हूं ।"

"उस मूर्ति को देख कर क्या तुम्हारे हृदय में कुछ भावनाएं पैदा होती हैं ?"

"कभी ख्याल तो नहीं किया ।"

संतोष उठ कर बैठ गये और आखें खोलदीं । कमला उनकी दुःख भरी आखों की तरफ़ देख रही थी । संतोष ने धीरे से कहा "हम मूर्ति

से इस लिए प्रेम करते हैं कि वह कोई गुनाह नहीं कर सकती। वह पवित्र है और उसको हम जिस तरहका बनाना चाहें अपने विचारों द्वारा बना सकते हैं"।

कमला ने सिर हिला दिया।

"उस मूर्ति से हम हमेशा प्रेम करते हैं और हमारे मरते दम तक उस प्रेम में कोई परिवर्तन नहीं आता। कई उस मूर्ति को नहीं चाहते। कई उसे भद्दा बताते हैं, बहुत से उसे नष्ट कर देना चाहते हैं, कई उसके पुजारी का प्रेम देख कर उसे पागल समझ हंस देते हैं और कई उसके रास्ते में आकर उस में बाधा देने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु——"

"उसका प्रेम और बढ़ता जाता है।"

"क्या यह सच है?" चौंक कर संतोष ने पूछा।

"क्या?"

"कि वह पुजारी अपनी मूर्ति को भूल नहीं जाता। उसे वह रास्ता कठिन प्रतीत नहीं होता वह अपने प्रेम में असफलता देखते हुए भी अनेक प्रकार के दुःख सहते हुए अपने निश्चय पर अड़ा रहता है।"

संतोष बड़े गौर से कमला की ओर देख रहे थे।

"इसमें तो कोई शक की बात नहीं। जब तक दुःख नहीं मिलता तब तक सुख का स्वाद नहीं आता। जब तक मनुष्य नमक नहीं चखता उसे मिठाई का मजा नहीं आता। जब तक चोट नहीं लगती दर्द नहीं होता, तब तक तन्दुरुस्ती का सुख आदमी महसूस नहीं करता। ये दोनों दशाएं हमेशा साथ रहती हैं। इनको अलग नहीं किया जा सकता।"

"एक आदमी सुख भोग सकता है परन्तु वही आदमी दुःख नहीं सह सकता।"

"हां" आह भरते हुए कमला ने कहा "यह सब मनुष्य और उसके कर्तव्य पर निर्भर है। अगर वह अपने निश्चय पर अटल रहे तो उसे हर प्रकार के दुःख सहने के लिए तैय्यार रहना होगा। वह दुनिया की बड़ी से बड़ी चीज को ठोकर मार सकता है। उसका धर्म है कि वह अपने रास्ते पर बिना रुके चलता जाए। वह एक दिन अवश्य अपने पड़ाव पर पहुँच जाएगा।"

"शायद" धीरे से संतोष ने कहा।

कुछ देर दोनों चुप रहे। संतोष ने फिर आँखें बन्द कर लीं। कमला कुछ देर सोचती रही, फिर बोली "आज आप क्या अण्ट सण्ट बातें कर रहे हैं ?"

"कुछ नहीं। सोच रहा था कि अगर एक प्रेमी को यह मालूम हो जाए कि उसकी सोने की मूर्ति सोने की नहीं, लोहे की है तो उसे कितना दुःख होगा। शायद वह उसे उठा कर बाहर फेंक दे। प्रेम की जगह उसके हृदय में घृणा पैदा हो जाय।"

"तो वह ईश्वर से नहीं मूर्ति के सोने से प्रेम करता है। अगर उसका प्रेम सच्चा है तो वह मिट्टी की मूर्ति ही उसके लिए सोना है।"

"दुनिया में ऐसे मनुष्य बहुत कम हैं जो एक चीज को किसी एक हालत में पाकर फिर उसी को दूसरी हालत में देख कर भूल नहीं जाते। एक अमीर जब गरीब हो जाता है तो उसके सब दोस्त उसे भूल जाते हैं।"

"मतलबी दोस्त मित्रता में सच्चे नहीं उतरते। वे मनुष्य के धन से प्रेम करते हैं। दौलत खतम हो गई और उनका प्रेम भी खतम।"

"हां" धीरे से संतोष ने कहा।

प्रेम

राग

शाम हो चली थी। चिड़ियां अपने घोंसलों की ओर उड़ चलीं थीं। कमला और संतोष चुप-चाप बादलों की ओर देख रहे थे। दोनों के हृदय में भिन्न प्रकार के विचार उठ रहे थे। कमला दृश्य को देख कर बहुत खुश हो रही थी कि सूर्य्य का अस्त होना कितना सुहावना प्रतीत होता है। संतोष के हृदय में कौतूहल सा हो रहा था। उनके विचारों में कमला के कहे हुए वाक्य घूम रहे थे। "आदमी का धर्म है कि वह अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिए सब कुछ बलिदान कर दे।" क्या उन्हें अपने कर्त्तव्य के लिए कमला को भूल जाना चाहिए ? दुनिया में इससे ज्यादा उनके पास कोई बहुमूल्य चीज नहीं है।

मैं कमला को नहीं भूल सकता। वह मुझसे प्रेम करती है। वह यह जान कर कि मैं नीच हूँ मुझसे उतना ही प्रेम करेगी। हम दोनों इतना

प्रेम करेंगे कि एक दूसरे को छोड़ न सकें। तब अगर उसे मालूम हो जाय कि मैं अछूत हूँ तो भी वह मुझे भुलाएगी नहीं। और अभी तक इसके मालूम हो जाने की कोई आशंका ही नहीं।

संतोष तुम यह गलती कर रहे हो। तुम्हें जानना चाहिए कि कहना आसान है लेकिन उस बात का पूरा करना बड़ा कठिन। कमला एक तो कोमल स्त्री ठहरी। तुम पुरुष होते हुए भी अपने कर्तव्य से हटे जा रहे हो। तो क्या वह दुनियाँ की हंसी और मजाक को सह सकेगी? हरगिज नहीं। तुम अभी से उसे भूल जाओ इससे तुम दोनों को कम दुःख होगा।

यह सोच कर कि मैं कमला से सब कहे देता हूं उन्होंने कहना चाहा। परन्तु फिर यह सोच कर कि सब बातें कमला से क्यों कही जाएं, वे चुप हो गये। शायद कमला उस से प्रेम नहीं करती। सिर्फ़ मजाक ही उड़ा रही हो तो!

"कितना सुहावना समय है। मेरा हृदय चाहता है कि मैं गाऊं।"

"अवश्य"

कमला ने गाया। उसने गाया 'सजनि घर आओ' संतोष कुछ देर सोचते रहे। उन्होंने भी कमला के साथ गाना शुरू कर दिया। दोनों के हृदय की प्रेम कामनाएं उस शीतल वायु को मधुर करने लगीं।

गाना खतम हो गया। दोनों एक दूसरे की ओर देखने लगे।

"दिल चाहता है कि मैं रोज इसी तरह गाया करूँ।"

"मेरा भी," धीरे से संतोष ने कहा।

"तो हम दोनों ही इकट्ठे गाया करेंगे।" मुस्कराते हुए कमला बोली।

"अच्छा"

"अब मैं जाती हूं। देर हो गई है।" घड़ी देखते हुए कमला ने कहा। "मेरे पहिले सवाल का जवाब दीजिये कि आज आप आए क्यों नहीं ?"

"ऐसे ही"

"अच्छा तो कल जरूर आइयेगा। अगर नहीं आये तो मैं कभी गाना नहीं सुनाऊंगी।"

डांवां

डोल

प्रेम क्या है कोई बता नहीं सकता। उसका वर्णन करना बहुत कठिन है। इसके वर्णन करने से कोई लाभ भी नहीं होता। क्योंकि दिल की यह हालत सिर्फ वही जान सकता है जिसने प्रेम किया हो। जिस भांति एक बालक को रेल गाड़ी देखने का चाव होता है और उसे देख कर उसका हृदय प्रफुल्लित हो जाता है। जिस भांति उस बालक का खिलौना टूट जाने पर रोना बन्द नहीं होता जब तक कि दूसरा खिलौना न मिल जाए। उसी भांति एक प्रेमी का बाल हृदय अपनी प्रेमिका देखने के लिए हर समय व्याकुल रहता है और उसे पाने के लिए वह जमीन आसमान के कुलाबे मिलाने को तैयार रहता है। प्रेमी और बालक में सिर्फ इतना ही फ़र्क है कि उसमें सुख और दुःख बहुत ज्यादा है। प्रेमी का टूटा हुआ हृदय बनाया नहीं जा सकता और न ही उसे दूसरा खिलौना मिल सकता

है । प्रेमी के उस खिलौने में जान है जिससे वह और भी कीमती और बहुत ज्यादा सुन्दर है । प्रेमी का प्रेम वही समझता है जिसने कभी प्रेम किया हो ।

प्रेम मनुष्य को अन्धा बना देता है । वह खिलौने पा कर वह सब खेलना-कूदना भूल जाता है और उसे एक पल के लिए भी अपने हृदय से दूर नहीं कर सकता ।

प्रेम मनुष्य को आशा देता है और उस आशा के सहारे कठिन से कठिन काम करने को तैय्यार हो जाता है । क्यों ? उस अनमोल खिलौने की क़ीमत चुकाने के लिए ।

प्रेम में सफल होकर मनुष्य का हृदय बहुत उभर जाता है । वह हवा में उड़ने लगता है । वह खुशी से फूला नहीं समाता ।

प्रेम में असफल होकर प्रेमी का हृदय टूट जाता है । वह उस बालक की तरह रोता है जिसका खिलौना टूट गया हो जिसके माता-पिता बहुत दीन होने के कारण दूसरा खिलौना न दे सकते हों । वह चुपके-चुपके रोता है । शायद वह आ जाए । वह हवा से बातें करता है । दुनिया उसे पागल कहती है ।

सन्तोष ने कई बार निश्चय किया कि बात कमला को बता दूं । परन्तु फिर इस डर से कि हाथ में आया हुआ शिकार छूट न जाय वे बनाये हुए निश्चय को भूल गए । उन के मन में एक चाह थी, कमला को पाना ।

वे उठे और कपड़े पहिन पुजारी जी के यहां जा पहुंचे । कमला पहिले से ही इन्तज़ार कर रही थी । एक दूसरे को प्रणाम कर बैठ गये । पढ़ाई शुरू हुई । पुजारी जी अन्दर थे । इसलिए किताबें सामने और दिल कहीं और था । थोड़ी देर बाद पुजारी जी बाहर गये तो दोनों को मौका हाथ आया । सन्तोष कुछ झेंप रहे थे कमला चट बोल उठी "अब मेरा दिल पढ़ने में नहीं लगता । बहुत पढ़ लिया । आइये बाग़ में चल कर दिमाग़

ठण्डा कर आवें।" दोनों बाग़ में चले गये। कमला चमेली के पास वाली बेंञ्च पर बैठ गई। सन्तोष वहीं खड़े फूलों का एक गुच्छा बनाने लगे।

कुछ देर दोनों चुप रहे। कमला ने कहा "क्या आज फिर बुत बनियेगा?"

"मेरी तो यही इच्छा है कि हमेशा बुत बना रहूं और कोई मुझे इसी तरह प्रेम करता रहे।" गुलदस्ता आगे बढ़ाते हुए "क्या मैं ये फूल अपनी देवी पर चढ़ा सकता हूं?"

कमला ने मुस्कुराते हुए ले लिया।

"कमला"

"हां सन्तोष"

"क्या तुम मुझे———"

"बहुत ज्यादा" हंसते हुए कमला ने कहा।

"तुम मुझसे हमेशा ही इतना प्रेम करोगी"

"नहीं"

"नहीं" ताज्जुब से सन्तोष ने पूछा।

"मेरा मतलब था" वह बेंञ्च से उठी और सन्तोष के पास आकर खड़ी हो गई। "नहीं, ज्यादा।"

"लेकिन अगर तुम्हें मालूम———" सन्तोष के मुंह में आई हुई बात रुक गई।

"क्या?" ताज्जुब से कमला ने पूछा।

"कुछ नहीं। आओ खेलें।"

आत्मा-

भिमान

दिन में मनुष्य रात की बनाई हुई सब तसवीरें भूल जाता है। लेकिन जब फिर रात आती है और इस अंधेरे में दिन की सब बातें चित्रपट के सफ़ेद परदे पर अपना कौशल दिखाती हैं, तो मनुष्य को भूली हुई सब बातें याद आ जाती हैं। वह फिर सोचता है। फिर निश्चय करता है। लेकिन आज का निश्चय कम कठिन है। होते-होते एक दिन वह आ जाता है कि पुराने चित्रपट की जगह एक नया ही चित्रपट नज़र आने लग जाता है। उसमें ज्यादा आनन्द है। वह नया, रंगीला और इतना अद्भुत है कि वह उसे ही देखते रहना चाहता है।

सन्तोष और कमला में प्रेम की बड़ी बातें हुईं। रात को वे निश्चय करते कि आज जरूर कमला को बता दूंगा। लेकिन जब कमला से मिलते

सिवाय प्रेम के सभी कुछ भूल जाते हैं। फिर धीरे-धीरे यह निश्चय बिल्कुल भूल गए।

अछूत का घाव जो उनके हृदय में लगा था उस पर प्रेम का मरहम लगने से उसका दर्द जाता रहा। परन्तु वह अभी इतना हरा था कि ज़रा सी ठेस लगते ही फिर खुल जाता और फिर पुराने घाव का बन्द होना बहुत कठिन हो जाता।

आज कालेज में लैक्चर है। सन्तोष के आग्रह से कमला ने जाने का इक़रार कर लिया। दोनों पांच बजे कालेज हाल में जा धमके। सब से पूछा गया कि कौन बोलेगा। सन्तोष के कहने पर कमला ने भी अपना नाम लिखा दिया। फिर सबको बताया गया कि आज के लैक्चर का विषय "अछूत का होना भारत की उन्नति के लिए आवश्यक है।"

सुनते ही सन्तोष कूद उठे। कमला ने पूछा क्या है। धीरे से बैठते हुए कहा "कुछ नहीं।"

व्याख्यान शुरू हुए। एक के बाद दूसरे ब्राह्मण महोदय ने अपने जिस्म को अपवित्र होने से बचाने के लिए और बिना ज़ोर लगाए और पैसा खर्चे मिली हुई ताकत को हाथ में रखने के लिए अत्यन्त प्रकार की ज़रूरतें और उपदेश दे डाले। सन्तोष के माथे से पसीने की बूंदें टपक रहीं थीं। उन्होंने आंखें बन्द कर सब सुना। इन कटाक्षमय शब्दों से उनका घाव फिर हरा हो गया। कमला उठी और उसने कहना शुरु किया "दुनिया के और किसी मुल्क में अछूत नहीं हैं। लेकिन और देशों में हमारे देश की तरह इतनी मूर्खता और अज्ञान भी नहीं हैं। जब तक यह अज्ञान दूर नहीं होता तब तक अछूतों का होना ज़रूरी है। पुराने लोगों के बनाए हुए रस्म रिवाज इतनी जल्दी तोड़े नहीं जा सकते।"

तालियां बजीं सब खुश थे। सन्तोष की आखों से घृणा और दुःख के दो आंसू निकल पड़े। उनकी हरी चोट पर कमला की बातें ने नमक

का काम किया। "प्रोफ़ेसर सन्तोष कुमार एम०ए०" उन्हों ने आंखें खोलीं। वे गुस्से से लाल हो रहीं थीं। वे सब कुछ भूल गए सिर्फ़ उन्हें एक बात याद रही। वह थी 'आत्माभिमान'।

"मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह हमेशा उन्नति करे। लकीर के फकीर को मनुष्य नहीं कहा जा सकता। वह एक गुलाम की न्याईं बताए हुए काम करता है। हर एक ज़माने में हमें उस ज़माने के मुताबिक चलना पड़ता है। अगर हम नहीं चलेंगे तो अवश्य पीछे रह जाएंगे और आगे दौड़ने वाले यह देख कर कि हम अपनी बेड़ियों के बोझ के कारण पीछे रह गये हैं, हम पर हंसेंगे। हमें चाहिए कि हम यह बेड़ियां तोड़दें और आगे बढ़ें। जब तक जीत न जाएं आगे ही बढ़ते जाएं। यह काम बहुत कठिन है हमारे और आप के लिए कठिन नहीं। अछूत भी एक मनुष्य है उसे हम अछूत इसलिए कहते हैं कि वह हमारे लिये नीच काम करते हैं। उसके न रहने पर हम बहुत मुश्किल में पड़ जाएंगे और इस तकलीफ़ से बचने के लिए हम उस पर हर प्रकार के जुल्म ढाने को तैय्यार हैं। वह मनुष्य है। उसके भी हृदय है और उसमें चोट भी लगती है जैसे तुम्हारे। वह बलहीन है। लेकिन तुम्हारी सख्तियां वह और ज्यादा नहीं सह सकता। जल्द वह दिन आने वाला है जब वह तुम्हारी बनाई हुई इस चहार दीवारी को तोड़ कर बाहर निकल आएगा। उसमें और तुममें क्या फ़र्क़ है? जहां तुम जैसे पापी और अनर्थ करने वाले मौजूद हैं वहां पंडित बद्रीनाथ जैसे महात्मा भी हैं जिन्होंने मुझ अनाथ बालक को आश्रय दिया था। बताओ मुझमें और तुममें क्या फ़र्क़ है? मैं अछूत हूं, नीच हूं, लेकिन" (सब लोगों ने धीरे धीरे उठना शुरु कर दिया कुर्सी पर बैठी कमला रो रही थी) "क्या मेरे पास हृदय नहीं? क्या मेरे दिमाग़ में तुम से कुछ कमी है? क्या मेरे चोट नहीं लगती। क्या मैं तुम्हें——" किसी ने बाहर से कुछ फेंका जो सन्तोष की कनपटी पर लगा। वे बेहोश हो कर वहीं गिर पड़े। एक चीख सुनाई दी। एक ज़ोर की हंसी।

बहुत से भाग गये । एक दुखियारी लड़की उठी । वह उस बेहोश को देख कर रो दी । उसने उसे उठाने की कोशिश की । लेकिन बोझ बहुत भारी था । अंधेरा हो गया था । वे दोनों वहीं पड़े थे । एक बेहोश दूसरा होश में होते हुए भी कुछ नहीं कर सकता था । उसके आंसू उसके मुख पर गिर रहे थे । उसे होश आया धीरे से बोला ।

"कमला"

नाक कट गई

कमला संतोष को अपने मकान पर ले गई । पिता अभी मन्दिर से नहीं आए थे । ढपोलशंख महाशय दौड़ते हुए पण्डित जी के पास पहुंचे । सब राम कहानी कह सुनाई । 'अनर्थ हो गया, गजब हो गया ।' सब पुजारी जी को कह सुनाया । पुजारी जी ने कानों पर हाथ लगा कर तौबा की, और हरि ओ३म् कह कर गहरी सांस ली । "ओ पापी क्या अपने साथ हमें भी नर्क में ले जाना था । हमें क्या पता था कि तू नाग है । अगर जान पाते तो उसी दिन पैर तले कुचल देता । कम्बख्त तुझे राधा जी के पुजारी के साथ भी धोखा करते शर्म नहीं आई । तू ने मेरा सर्वनाश कर दिया ।" सैंकड़ों गालियां निकालते और आवाजें कसते पुजारी जी घर पहुंचे । दरबान डयोढ़ी पर मुंह बनाए बैठा था । उन्हें देख कर नाक भौंह और भी सिकोड़ ली । ढपोलशंख ने कान तो पहिले ही

भर दिये थे । जब दरबान से पूछा बिटिया कहाँ है तो उसने फटे मुंह से कहा "वहाँ कहीं होगी । भैय्या हम ऐसी नौकरी न करब ।"

"क्या तेरी नानी मर गई" खिजते हुए पंडित जी बोले ।

"नहीं ग़रीब परवर नहीं ! हम का जानत रहे कि ब्राह्मण के घर मा भङ्गी भी रहत है । नहीं तो हम नौकरी काहे करतेन । बड़े राधा माता के पुजारी और आज बिटिया——"

"बिटिया" गुस्से से पुजारी जी ने पूछा ।

"जी हां हुजूर आज तो सारे शहर में हल्ला-गुल्ला हो रहा है । वह जो बिटिया के मास्टर अहैं वह ब्राह्मण नहीं, नीच अहैं ।"

"तो फिर"

"बिटिया उन्हें अपने यहां ले आई है । और हम——"

पुजारी जी दौड़े । एक-एक क़दम में चार-चार सीढ़ियां चढ़ गये । दालान में पहुंचते सांस चढ़ गया । सत्रह मन की लाश और उस पर अभी आरती का प्रसाद खा कर आये थे । बेचारे हांफते न तो क्या । हांफते और गालियां निकालते पुजारी जी बीच के कमरे में पहुँचे । जैसे हाथी अपनी सूंड़ से पेड़ गिराता और पौधों को कुचलता हुआ जङ्गल में भागता है और उसका यह शोर गुल सुन कर शिकारी चौकन्ने हो जाते हैं । कमला ने जब कमरे में कुर्सियां और फूलदानों के गिरने की आवाज़ सुनी तो वह एक दम चौकन्ना हो गई और दौड़ कर दूसरे कमरे में पहुंच गई । पुजारी जी बेतहाशा सिर उठाये लपके चले आ रहे थे । कमला को देख कर एक दम खड़े हो गये । हांफ रहे थे । गुस्से से आवाज़ बन्द थी । कमला उनके सामने खड़ी हुई रो रही थी । उसके विचारों की मूर्ति को ठेस लगी थी । परन्तु टूटी नहीं थी । टूटे हुए शीशे का जुड़ना अत्यन्त मुश्किल होता है । परन्तु जिस भांति अग्नि में शीशे को पिघला कर उसे ढांचे में ढाला जा सकता है उसी भांति कमला

अपनी मूर्ति को प्रेम अग्नि में डाल कर नया बनाना चाहती थी। पुजारी जी की सांस काबू में आई तो उन्होंने गुस्से से कहा "कमला।"

"हां पिता जी।"

"कमला, आज तुमने सरे बाजार मेरी नाक कटवा दी।"

"क्यों।"

"क्यों! देखो इसकी हिम्मत, फिर पूछती है क्यों। मेरा तो तूने सर्वनाश कर दिया। मैं तो पहिले ही जानता था कि तू हम सब को ले डूबेगी।"

"लेकिन पिता जी मैंने तो कुछ नहीं किया।"

"अभी कहती है कुछ नहीं किया। और न मालूम क्या करना चाहती है। फांसी चढ़ाना था फांसी। जानती है बिरादरी से निकाल दिये जायेंगे। मन्दिर में कोई सिन्नी चढ़ाने भी नहीं आएगा।"

"क्यों?"

"क्यों-क्यों की धुन लगा रक्खी है। जैसे कुछ जानती ही नहीं। कहाँ है मुआ वह तेरा मास्टर?"

"गालियाँ निकालने से पिता जी कोई लाभ नहीं होगा।"

"लाभ हो या न हो मैं नहीं जानता। बता वह कहाँ है? देखते ही उसका गला घोंट दूंगा।" दांत पीसते हुए पुजारी जी बोले।

कमला रो रही थी। पुजारी जी को यह देख और गुस्सा चढ़ गया। फिर तैश में बोले "बड़ी आई है रहम दिल। तू यह बता कि उसे मेरे मकान में क्यों लाई?"

"उसके चोट लग गई है। तकलीफ है इसलिए ले आई।"

"तेरे सिवा और तो कोई डाक्टर नहीं है।"

"परन्तु पिता जी, इसमें हर्ज ही क्या है?"

"अभी हर्ज ही नहीं है। नीच को घर म घुसा लिया और फिर कहती है हर्ज ही क्या है ?"

"वह मनुष्य है।"

"वह नीच है।"

"मैं उनसे——" आखें हाथ से बन्द कर कमला जोर-जोर से रोने लगी। उसका हृदय अब नहीं सह सकता था।

सम-

झावा

"कमला" धीरे से संतोष ने पुकारा ।

"जी" कमला पास आकर बैठ गई ।

पुजारी जी कोचवान से गाड़ी जोतने को कहने गये ।

"कमला तुम मुझे यहां क्यों लाईं ?"

"चुप"

"यह तुमने ठीक नहीं किया । मुझे तुम्हारी इस सहानुभूति से बड़ी लज्जा आ रही है । भारत की स्त्री का हृदय बड़ा दयालु और सच्चा है । मैं मनुष्य होकर भी डरता ही रहा । मैं प्रेम में पागल हो रहा था । मैं सब कुछ भूल गया । कमला मैंने कई बार प्रयत्न किया कि तुम से सब कुछ कह दूं । लेकिन न कह सका । कमला मैं पापी हूं । तुम देवी हो मुझे माफ़ करो ।"

कमला चुप थी । पलंग पर सिर रक्खे रो रही थी ।

"तुम चुप हो कमला । तुम्हें बहुत दुःख है । यह सब मेरे कारण है । अगर तुम मुझे माफ़ नहीं कर दोगी , कमला, तो———"

"मूर्ति कभी अपने पुजारी से क्षमा नहीं मांगती ।"

"मैं मूर्ति नहीं, पापी हूं । मेरे हृदय में मलीनता है । तुम मुझसे प्रेम नहीं कर सकतीं, कमला । मेरे और तुम्हारे रास्ते बिल्कुल अलग-अलग हैं । इस रास्ते में अब हम कभी नहीं मिल सकेंगे । मुझे अपने पापों का प्रायश्चित करना है । तुम्हें अपनी सच्चाई और गुणों का लाभ उठाना है । मुझे भूल जाओ, कमला । इसी में तुम्हारा हित है ।"

रोते हुए कमला ने कहा "भारत की नारी एक ही पुरुष से प्रेम करती है ।"

"नहीं, कमला, नहीं ।"

कमला रो रही थी । पुजारी जी अन्दर आ गये । गुस्से से कहने लगे "बेवफ़ा कुत्ते तुझे धोखा देते शर्म नहीं आई । जिस पेड़ की ओट में बैठा था उसी पेड़ की जड़ काटना चाहता था । तुझे नमक हरामी———"

"पिता जी" चिल्ला कर कमला ने कहा ।

"कमला, तुम्हारी और बातें मैं नहीं सुनना चाहता । तू नादान है । तुझे कोई ब्राह्मण पानी तक नहीं देगा । यह नीच है ।"

"परन्तु यह मेरे लिए देवता के समान है ।"

"बस चुप रह । मैंने तेरी बकवाद बहुत सुन ली ।"

संतोष पलंग से उठे और बाहर की तरफ़ चल पड़े । कमला ने उन्हें पकड़ लिया ।

"कमला मुझे छोड़ दो,"

कमला ने उनकी बांह और जोर से पकड़ ली। पुजारी जी ने जब देखा कि इस तरह अब काम नहीं चलता तो उन्होंने एक तरकीब सोची। कमला को एक कमरे में बन्द कर दिया और संतोष को गाड़ी में बिठा कर भेज दिया।

कमला पलंग पर लेटी सोच रही थी। वह संतोष से प्रेम करती है और वह उससे। यह वह अच्छी तरह जानती है। परन्तु उन्होंने मुझे पहिले क्यों नहीं बता दिया? वह अभी अपनी धुन में ही मस्त थी कि पुजारी जी अन्दर आ गये और कमला के पास बैठ गए। कमला के सिर पर हाथ फेरते हुए उन्हों ने कहा, "कमला रो रही हो?"

कमला चुप थी।

"देखो बिटिया तुम्हारे सिवा मेरा इस संसार में कोई नहीं है। अगर आज तुम्हारी माता जीवित होतीं तो मुझे ये दिन न देखने पड़ते। तुम्हें अपने पिता से बिल्कुल प्रेम नहीं? मैंने तुम्हें पाला पोसा है। देखो कमला मुझे कितना दुःख है?"

कमला की हिचकियां बंध गईं थीं।

"दुनिया में मान सब से बड़ी चीज है। जिसका मान नहीं उसे दुनिया में कोई नहीं चाहता। मान मर्यादा के लिए आदमी को सब कुछ करना पड़ता है। जो कुछ हमारे ऋषियों ने लिखा है सत्य लिखा है। तुम्हें उनका कहना मानना चाहिए। अगर हम उनके बताए हुए रास्ते पर नहीं चलेंगे तो नर्क में जाएंगे।"

कमला पिछले दिनों की सब बातें याद कर रो रही थी। वह कितने सुहावने दिन थ?

पुजारी जी ने अपना व्याख्यान जारी रक्खा "कमला तुम तो बड़ी समझदार लड़की हो। तुम्हें मेरी लाज रखना होगा। कोई सुन लेगा तो हमारी नाक कट जायगी। अब चलो बिटिया खाना खायें।"

कमला को साथ ले पुजारी जी चौके में गये परन्तु उसने खाने से इनकार कर दिया।

"अगर तुम नहीं खाओगी तो मैं भी तुम्हारे साथ भूखा रहूंगा।"

आखिरी मिलन

रात हो गई थी। बड़ी अंधेरी रात थी। हाथ फैलाएं तो हाथ नजर नहीं आता था। कमला पलंग पर लेटी रो रही थी। पिता जी की बातों से उन्हें कितना दुःख हुआ होगा? कितने निर्दयी हैं मेरे पिता जी? एक दुःखी मनुष्य को इतनी बातें कह डालीं। न मालूम उनकी चोट का क्या क्या हाल है? मुझे चल कर देखना ही चाहिए। कुछ सोच कमला पलंग से उठी और पुजारी जी के कमरे में गई। वे उल्टे-पड़े खुर्राटे ले रहे थे। धीरे से दर्वाजा खोल कर बाहर निकली। कुछ दूर जाते एक इक्का नजर आया। उसे रोक कर गोलबाग़ चलने को कहा।

संतोष पलंग पर पड़े कराह रहे थे। उनके सिर में काफ़ी चोट आई थी। परन्तु सिर के दर्द से उनके हृदय का घाव ज्यादा पीड़ित था। कभी वे अपनी हालत पर हंसते। प्रेम की बातें याद आते ही उन्हें अपने

कमज़ोर हृदय पर क्रोध आता । वे प्रेम में अन्धे हो गये थे । परन्तु ईश्वर ने उन्हें रास्ता दिखा दिया है । अब वे यह रास्ता कभी नहीं भूलेंगे । मेरे कारण कमला का हृदय कितना दुःखी हुआ होगा ? मैंने यह ठीक नहीं किया । वह देवी है । उसका हृदय प्रेम और उल्लास से भरा है । मैंने अपने स्वार्थ के कारण उसे चकना चूर कर दिया । मैं पापी हूं । मैं उस देवी के पैरों पड़ उससे क्षमा मागूंगा । वह अवश्य मुझे माफ़ कर देगी ।

कमला धीरे-धीरे अन्दर आई । संतोष आंखें बन्द किये लेटे थे । आहट पा कर बोले "कौन" । कमला चुप रही । पास आकर खड़ी हो गई । संतोष पलंग से थोड़ा सा उठे कुछ देर उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि वे स्वप्न देख रहे हैं । उन्हें अपनी आखों पर विश्वास नहीं आया । कुछ देर सोच कर उन्होंने फिर कहा "कौन?"

कमला फिर चुप रही ।

संतोष ने आश्चर्य से पूछा "क—म—ला"

कमला चुप खड़ी थी । उसकी आंखों से आसुओं की धारा बह रही थी ।

"कमला तुम यहां क्यों आईं ?" पलंग से उठते हुए संतोष ने कहा ।

"अपने देवता से माफ़ी मांगने के लिए "

"कमला" ज़रा ज़ोर से संतोष ने कहा ।

कमला चुप रही ।

"कमला तुमने यह ठीक नहीं किया । तुम्हें यहां नहीं आना चाहिए था ?"

"क्यों"

"मैं पापी हूं । दुनियाँ मुझे पापी समझती है । तुम्हें भी यही कलंक लग जायगा । अगर किसी को पता लग गया कि रात इस समय तुम मेरे पास यहां अकेली आई थीं तो———"

"तो" आश्चर्य से कमला ने पूछा ।

"इस दुनिया में मेरा कोई नहीं है । मैं नीच हूं और हमेशा वही रहूंगा । परन्तु तुम्हें अपनी और अपने पिता की मर्य्यादा का ख्याल रखना चाहिए ।"

"नहीं संतोष नहीं । मैं इसकी बिल्कुल परवाह नहीं करती । मैं तुमसे प्रेम करती हूं ।" रोते-रोते कमला ने कहा ।

"कमला तुम मुझे भूल जाओ ।"

"यह मेरे बस की बात नहीं है संतोष । मेरा हृदय नहीं मानता । मैं तुम्हें कैसे भूल सकती हूं ।"

कमला पलंग पर बैठ गई और हाथों में मुंह छिपा रोने लगी । संतोष सामने खड़े थे । उन्होंने धीरे-धीरे कहा "कमला मैंने तुम्हारे साथ धोखा किया है । तुम अगर मुझसे प्रेम करती हो । तो मुझे माफ कर दो और हमेशा के लिए भूल जाओ । पहिले तुम्हें अवश्य कुछ दुःख होगा । परन्तु जैसे दिन बीतते जाएंगे, मेरी याद दिल से मिटती जाएगी । अब तुम घर जाओ कमला ।"

"नहीं मैं घर नहीं जाऊंगी ?" रोते हुए कमला ने कहा ।

"कमला पागल मत बनो । भारत की नारी को सब से प्रिय अपनी लाज है । भारत की नारियों के नाम पर धब्बा मत लगाओ । तुम देवी हो । लेकिन दुनिया यह जान कर——।"

"क्या जान कर ?" जल्दी से कमला ने पूछा ।

"दुनिया बात का बतंगड़ बना देती है ।"

"मुझे इसकी बिल्कुल पर्वाह नहीं । हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं और हमेशा करते रहेंगे ।"

"नहीं कमला नहीं ।"

"क्यों नहीं ? क्या आप मुझ से प्रेम——?"

"कमला मैं तुमसे बहुत प्रेम करता हूं," रोते हुए संतोष ने कहा। "परन्तु यह प्रेम ठीक नहीं है। हम गलत रास्ते पर जा रहे हैं।"

"नहीं"

कमला ने संतोष का हाथ पकड़ लिया और धीरे-धीरे बोली, "अगर दुनिया हमें तंग करेगी तो हम यह दुनिया ही छोड़ देंगे"

"इसमें बहुत दुःख होगा।"

"मैं दुःख से नहीं डरती।"

"इसमें तुम्हारा अपमान है।"

"कैसा ?"

"तुम्हारे पिता को लोग गालियां देंगे। इस दुनिया में उनका जीना दूभर हो जायगा। इस बुढ़ापे में तुम उन्हें छोड़ कर कहां जाओगी?"

"नहीं मैं उन्हें छोड़ कर कहीं नहीं जाऊंगी। हम सब यहीं रहेंगे। मैं रोज रात आप से——"

"नहीं।"

"मैं रोज रात को आप से मिलने आऊंगी।"

संतोष ने कमला को अपनी बाहों में ले लिया। दोनों एक दूसरे की ओर देख कर रो दिये।

दो

रास्ते

बाक़ी की रात संतोष के लिए स्वप्न की तरह कटी। कमला आई। रोई। कुछ कहा और चली गई। वह फिर आएगी। कुछ कहेगी और फिर दूसरी रात को आने के लिए चली जायगी। जिस रात वह आएगी वह रात मेरे लिए स्वर्ग के समान होगी। वह जो कुछ कहेगी। मैं सुनूंगा। वह रोएगी और मैं भी उसके साथ आंसू बहाऊंगा। धीरे-धीरे हमें अपना दुःख भूल जायगा। फिर वह गाएगी, मैं भी गाऊंगा और फिर दोनों इकट्ठे बहुत देर तक गाते रहेंगे।

दिन चढ़ गया।

रात की बातें संतोष ने दिन के उजाले में देखीं। सुन्दरता की जगह उन्हें और भयानक दृश्य नजर आने लगा। ईश्वर ने उन्हें रास्ता दिखा दिया है। अब वे फिर भटके जा रहे हैं। एक स्त्री का प्रेम उन्हें नष्ट

कर देगा । नहीं, वह अपने झूठे और मतलबी प्रेम से एक नन्हा सा दिल जिसमें सिवा प्रेम और सचाई के और कुछ नहीं है हरगिज नहीं तोड़ेंगे ।

संतोष ने बहुत सोचा क्या करना चाहिए । लेकिन कुछ समझ में न आया, वे जानते थे कि दिन के बनाये हुए निश्चय रात को फिर भूल जाएंगे ।

वे धीरे-धीरे उठे । सब किताबें इकट्ठा कीं । और छोटा सा बिस्तरे का पुलिन्दा बांधा ।

"मेरी देवी !

"दिन रात मैं तुम्हारी ही पूजा करता रहा । इस पूजा में कितना प्रेम और सुख है यह मेरा हृदय ही जानता है । मैं जब तक जीवित रहूंगा हमेशा अपने हृदय की देवी की पूजा करता रहूंगा । इस प्रेम में पागल होकर मैंने बहुत से पाप किये । तुम देवी हो । अति दयालु हो । तुम मुझे अवश्य माफ़ कर दोगी कमला !

"मेरे जीवन का तुम एक सहारा हो । तुम्हारे प्रेम के आवेश में मैंने भी क्या-क्या उच्चाकांक्षाएं बनाईं । तुम्हारे प्रेम की ज्योति से मेरे सुनसान हृदय में फिर ज्योति पैदा हो गई । वे कितनी खुशी के दिन थे ! वे कितने प्रेम के दिन थे । अब मैं उन्हें नहीं पा सकता । मैं रो रहा हूं । मेरे प्रेम का सूर्य्य भविष्य के अंधकारमय बादलों में छिप गया । अब मैं दूसरी ज्योति पाने के लिए एक अंधेरे मार्ग पर जा रहा हूं । मुझे आशा है कि इस अंधेरी रात में चन्द्रमा की रोशनी दिखाई देगी । वह रोशनी कितनी मद्धम होगी मैं जानता हूं । परन्तु यह जान कर कि यह चन्द्रमा की ज्योति भी तुम्हारे ही प्रेम के कारण है मेरे हृदय में बड़ी शांति होगी ।

"मैं इस अंधेरे रास्ते पर क्यों जा रहा हूं । मैं खुद नहीं जानता । एक छिपी हुई शक्ति मुझे उस तरफ़ खींच रही है ।

"मेरी कमला ! मुझे भूल जाना । मैं तुम्हारी प्रेम ज्योति का एक पतंगा हूं जो जल कर भस्म हुआ चाहता हूं ।

"तुम आज रात यहां आओगी । मैं तुम्हारे दर्शन नहीं कर सकूंगा । तुम्हें भी दुःख होगा । परन्तु हम दोनों के लिए यह ही उचित है । मैं हमेशा के लिए तुमसे विदा होता हूं ।

"मुझे माफ़ कर दो मेरी देवी ।

तुम्हारा पुजारी—
संतोष"

कमला आई, खत पढ़ा, रोई, पुकारा, किसी ने उत्तर नहीं दिया, वह चली गई ।

थक कर संतोष एक पेड़ की ओट में बैठ गये । कोई ख्याल आया, कुछ रोये, उठे और फिर एक तरफ को चल दिये ।

कजली

का

ब्याह

बिलासपुर एक छोटा सा गांव है। काशी से कोई बीस मील। यहां कुछ ब्राह्मण रहते हैं किन्तु ज्यादातर आबादी नीचों की है। नीचों पर ब्राह्मण क्या क्या अत्याचार करते हैं वर्णन करना व्यर्थ है। वे मन्दिर में पूजा नहीं कर सकते। ग़रीब होने के कारण ज़मीन नहीं जोत सकते। हां, मज़दूरी कर सकते हैं, ग़ुलामी कर सकते हैं और फल स्वरूप जो वेतन मिलता है वह एक व्यक्ति के पेट भरने के लिए भी काफ़ी नहीं होता। और फिर एक लुगाई और तीन बच्चे जिस के साथ हों?

वे अपनी इसी हालत में खुश हैं। जब शाम को काम से छुट्टी मिलती है तो सब आम के बड़े पेड़ के तले इकट्ठा होते हैं। वहीं उन्होंने गोबर का ढेर लगा रक्खा है और उस गन्दी आबादी में वह ही एक साफ़ जगह है।

"नाच कहरवा" गाया जाता है। गालियां निकाली जाती हैं चिलम चलती हैं और कहीं से दारू भी मिल गई तो उसे भी चट कर लिया जाता है। हुल्लड़-गुल्लड़ करते रात हो जाती है। कई तो वहीं लम्बे लेट जाते हैं और रात को कुत्ते उनका मुंह चाटते हैं और कई जिनके घर बाल-बच्चे हैं झोंपड़ी में लुगाई से लड़ने झगड़ने आ जाते हैं। खूब शोर होता है मार पिटाई होती है। गालियां निकाली जाती हैं। दोनों लड़ने में कमी नहीं करते। बच्चे रोते हैं। मुहल्ले वाले इकट्ठा होते हैं लेकिन यह सोच कर कि शायद हमीं पर कुफ न टूट पड़े, दूर ही रहते हैं। और कई अब घर आते हैं तो पहिले ही से तूफान बर्पा होता है। आमने-सामने वाले दो मकानों में दो औरतें मैले कपड़े पहने एक कन्धे पर और दूसरी बगल में छोटे बच्चे को उठाए गालियों की बौछार कर रही होती हैं।

"देख रांड़ तोहका अभी हम बताइत हैं। उनका आवै देव।"

"तोर चुटिया कटया के अगर जलावय न दीन्ह तो तू रांड का कहै।"

"रांड को देख मोर चुटिया कटवाई। सुसुरी जानत नाहीं राम दिनवा के बाप का। हड्डी पसली कुछ न बचै पाई।"

दोनों आदमी आ गये। दारू कम पी थी इसलिए कुछ होश में थे। पूछने पर मालूम पड़ा कि झगड़ा इस बात पर है कि राम दिनवा की मां ने कुन्नू कहार की गाय का गोबर उठा लिया। समझौता हो गया। गोबर वापस कर दिया गया और दोनों चुड़ैलें एक दूसरे की तरफ थूक कर अन्दर चली गईं।

आज पञ्चायत जरा जल्दी शुरू हो गई क्योंकि छेदी की लड़की का फैसला करना था। दस वर्ष की हो गई, अभी तक शादी नहीं हुई। अगर आज सर्व सम्मति से पास की हुई शर्तें उसने मन्जूर नहीं कीं तो उसे बिरादरी से निकाल दिया जावेगा। कोई उसे नेवता नहीं देगा और कोई उससे किसी बात का तआल्लुक नहीं रक्खेगा।

पञ्चायत शुरू हुई, बिरादरी के मुखिया कुन्नई बीच में बैठे और चारों ओर दूसरे बिरादरी वाले। छेदी भी आ गया। प्रणाम कर पीछे बैठ गया। मन्त्री महाशय ने कहा।

"अब भैय्या छेदी हमरे हाथ में कछु नाहीं। अगर होत तो ठीक कर देइत। ये बिरादरी वाले तो मानत नाहीं। मैं अकेला का कर सकत हौं।"

"भइया सब तुहार किरपा ते ठीक होय जाई।"

कुछ देर आपस में बातें होती रहीं फिर मुखिया ने कहा "हमन ईं सोचत रहें कि तुम कजरी का ब्याह रामगुलाम से करदेव।"

"अरे भइया हमार लड़की तो दस बरस की छोकरिया रही और राम गुलाम भवा चालिस बरस का बुढ़वा। एके अलावा ओकर पहिली लुगाई अबहु जीवत रहे।"

"ए से का होत है! ओ बंसी ठाकुर के ५) पावत हैन कि नाहीं। तुमार लड़की का सुख से रक्खें। तुम उसका का बनाए हो।"

"अचार डलवैहे भइया अचार" किसी ने बीच से कहा।

"देखो भैय्या छेदी कजली को रामगुलाम से ब्याह देब। गौना एक आध साल बाद कर दैहौ।"

"और मोका रुपिया कितने मिलिहैं" रामगुलाम ने पूछा।

"तीन दस"

"नाहीं भैय्या नाहीं! मैं तीन दस में शादी ना करिबौं। मैं तो पांच दस लैहौं।"

अच्छा अच्छा सब ने कह दिया।

"और पंगत" किसी ने याद दिला दी "पंगत बिना शादी होय सकत। हम सब का दाल भात खिलाना होई है।"

"सुनत है छेदी"

"भैय्या जो तुम सब कहिस्रो सुन तो सब लीन्ह पर मोरे पास पैसा एको नाहीं हवै ।"

"तो उधार काहे नाहीं लै लेत"

"मोहे कोई उधार देवत ईनाहीं । रामललवा का दो बीसी दैवै का बाकी ग्रहै ।"

"तो हम का जानत । न दैबो तो तुम्हार लड़की कौन ब्याहब ।"

"नाहीं, भैय्या नाहीं । तुम जानत हौ मैं कितन गरीब ग्रहौं । रामगुलाम भैय्या एक बीसी लै लेग्रो । मोर लड़की बहुत ग्रच्छी ग्रहै ।"

"ग्रौर गौना कब करिहौ ?"

"दुई एक साल बाद"

"ना भैय्या मैं तो दो बीसी से एको पाई कम न लै हौं"

"मोर पास तो इतना है ना ।"

"मारो सारे को। याको बिरादरी ते निकास देव" सब ने कहा । छेदी को चारो तरफ़ से उन्होंने घेर लिया ग्रौर लगे जूतियां पटखाने । उसने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया । पीछे से किसी ने चिल्ला कर कहा "मत मारो क्यों मारते हो बिचारे को ।"

पैग़ाम

सांझ हो गई थी। चोट से सिर में दर्द हो रहा था, परन्तु सन्तोष सिर लटकाए कच्ची सड़क पर चले जा रहे थे। सांझ होते २ वे बहुत दूर निकल जाएंगे। वे किधर जा रहे हैं? रास्ते पर कोई चिराग़ दिखाई नहीं देता। कोई रोशनी नज़र नहीं आती जो उन्हें बता सके कि मन्ज़िल अभी कितनी दूर है। सीधी सड़क बड़ी दूर तक दिखाई देती थी और उसके आगे नीला आसमान। जब एक क़दम उठाते तो उन्हें आशा होती कि शायद कुछ नज़र आ जाये। परन्तु वहां सुनसान समुद्र की न्याईं बहुत दूर तक सिवा जल के कुछ नज़र नहीं आता। वे इस सुनसान रास्ते पर क्यों चले जा रहे हैं। एक ओर प्रेम था, सुख था, कमला थी दूसरी ओर कठिनाइयां हैं, दुःख है और अछूत हैं। उस तरफ़ बदनामी थी इस तरफ़ पूज्य कार्य। प्रेम उन्हें एक तरफ़ खींच रहा था और कर्तव्य दूसरी ओर।

वे सीने पर पत्थर रखे बहुत दूर निकल आये थे । अब पीछे क़दम उठाना कठिन था । जितना आगे बढ़ते जाते, उतना ही प्रेम का खिचाव कम होता जाता । जब उन्हें कमला की याद आती तो वे सड़क के किनारे बैठ जाते, कुछ सोचते, पीछे मुड़ते, कुछ दूर जा, रो कर फिर वापिस लौट आते । कोई देखने वाला न था नहीं तो हँस देता । दुःख और मुसीबत से उनके चेहरे और दिमाग़ में कितना परिवर्तन हो गया था । दो दिनसे कुछ खाया नहीं था । रो-रो कर आँखें अन्दर धंस गई थीं । हजामत न बनाने के कारण उनकी शकल पुराने कैदियों जैसी नजर आ रही थी । कोई देखने वाला न था नहीं तो यह हालत देख रो देता ।

बोझ उठाए धीरे-धीरे चले जा रहे हैं । क्या आज की रात फिर मुझे पेड़ तले ही काटना होगा । नहीं ऐसे काम नहीं चलेगा । अब मुझे अपना काम शुरू करना चाहिए । परन्तु शुरू किस तरह किया जाय । हर एक काम के आरम्भ करने में मुश्किल पड़ती है और अगर आरम्भ हो जाए तो खत्म होकर ही रहता है ।

कुछ शोर ग़ुल की आवाज़ सुनाई दी । किसी के रोने की आवाज़ कान में पड़ी । वह उस तरफ़ आये और देखा कि एक ग़रीब को कई हट्टे कट्टे मनुष्य पीट रहे हैं । उन्होंने पास जाकर कहा, "मत मारो । क्यों मारते हो"

सब छेदी को छोड़ कर आगन्तुक की ओर देखने लगे । वे समझे थे कि शायद नम्बरदार या पण्डित का कोई आदमी आया होगा । देखा तो एक आदमी मैले कुचैले कपड़े पहिने सामने खड़ा है । उनकी हिम्मत बंध गई बोले "तू कौन होत है हमका रोकन वारो"

"कोई नहीं भाई, कोई नहीं । एक परदेसी हूं, दुःखी हूं, जानता हूं, दुःख क्या होता है । इसलिए किसी और को दुःखी नहीं देखना चाहता ।"

उन नीचों के समझ में कुछ नहीं आया। हां इतना वे जान गय कि यह कोई शहर का रहने वाला है।

"ओ भइया तुम अपनी गैल जाओ। हमरे काम में बाधा दइहो तो हम तुमका भी रगड़ देउब।"

"नहीं तुम ऐसे बुरे नहीं हो। एक ग़रीब आदमी को पीट कर तुम्हें क्या लाभ होगा।"

"हम एका मार डलबै, एका बिरादरी से निकार दीन्ह। ई आपन लड़की का बियाह नहीं करत" गुस्से से रामगुलाम ने कहा।

"हम कहत रहे कि थोड़े में करा देवै पर ई मानत नाहीं। भैय्या एक लड़की की शादी औ दो बीसी और दस रुपइया और पांत। ए का बहुत है। कहत है हमरे पास पैसा नाहीं।"

"हम कहत रहे जाके बनिया से उधार लै आओ तो कहौ नाहीं मानत। ऐसे पुरुष का हम बिरादरी में नायं राखब।"

"ओ भैय्या" हाथ जोड़ कर बुड्ढे ने रोते हुए कहा, "मोर पास एक पैसा नाहीं रहै। अबहूं बनिया के दो बीसी रुपैया देन रहै और कोठरी का किराया भुकतावै को। भैया मोर पास कजली की शादी करन काजै एक पैसउ नाहीं।"

"तुम सब बहुत मुर्ख हो," घूम कर सन्तोष ने सब की ओर देखा। "तुम नाम में ही नीच नहीं, तुम्हारी बुद्धि भी नीच है। तुम्हें अपने भाई को मारते लज्जा नहीं आती। तुम्हारी दिलेरी जब थी जब तुम में से हर एक इसे रुपया दे इस की लड़की की शादी करा देते। वह तुम्हारा अहसानमन्द होता। जब तुम्हें ज़रूरत पड़ती तब तुम्हारी मदद करता। वह तुम्हारा भाई है, ग़रीब है, उसके पास पैसा नहीं तिस पर तुम उसे पीट रहे हो।"

सब चुप थे । कौलिज के लैकचर अब उनकी आँखों के सामने नाच रहे थे ।

"तुम अगर सब मिल कर रहो तो तुम्हें इतना दुःख न उठाना पड़े । तुम भूखों न मरो । तुम्हारे ठोकरें न लगें । यह सब तुम्हारी मूर्खता का फल है । तुम क्यों नीच कहलाते हो । क्या तुम्हारा दिल अच्छी २ चीजें खाने को और सुन्दर २ कपड़े पहनने को नहीं चाहता । क्या तुम मन्दिर में पूजा करना नहीं चाहते ? तुम सब चाहते हो परन्तु तुम्हारी बुद्धि निर्बल है । ब्राह्मण जब पैदा हुआ था क्या उसके माथे पर तिलक लगा हुआ था, ब्राह्मण के बालक और तुम्हारे बालकों में कुछ भेद है । अगर है तो इतना कि जब से ब्राह्मण का बालक पैदा होता है वह शिक्षा और नेक काम सीखता है और तुम्हारा बालक नीच और गन्दे काम । तुम अगर चाहो तो सुधर सकते हो । तुम वह कर सकते हो. . . ."

"हम क्या कर सकते हैं" बहुत सी आवाजें आईं ।

"संगठन से तुम जो चाहो कर सकते हो । जहां संगठन है वहां कभी हार नहीं होती । जीत ही जीत है । तुम्हें अपने खोये हुए सुख वापस मिल सकते हैं । तुम पेट भर रोटी पा सकते हो । तुम मन्दिर में. . . ."

"मन्दिर में" बहुत सी उत्साह भरी नजरों ने सन्तोष की तरफ़ देखा ।

"हां तुम मन्दिर में जा कर पूजा कर सकते हो तुम्हें रोकने वाला कोई नहीं । आओ उठो मनुष्य बनो । नीच ज़िन्दगी छोड़ कर ऊँचे उठो ।"

"बोलो सिया पति रामचन्द्र की जय"

"बोलो महाशय जी की जय"

सब ने सन्तोष को कंधों पर उठा लिया ।

बिल्ली के बच्चे

कमला बहुत रोई। इतना रोई कि उसके आंसू भी सूख गये। संतोष का खत पास पड़ा था। उसे बार बार पढ़ती और रोती। दो दिन से उसने कुछ खाया नहीं। पुजारी जी ने बहुत कहा, समझाया, धमकाया लेकिन उसने सुनी अनसुनी कर दी।

दिन कट गये। रोना बन्द हो गया। लेकिन दुःखी हृदय में शांति नहीं आई। वह हर समय उदास रहती। बहुत कम बोलती और एक गहरी सोच में पड़ी रहती।

प्रेम और सुख से उसके हृदय की कली खिल उठी थी, परन्तु गुब्बारे की न्याईं ज्यादा हवा भर जाने से वह फट गई। फटा हुआ गुब्बारा देख बच्चा सिर्फ रो देता है वह फिर भरा नहीं जा सकता और न फिर हवा में उड़ ही सकता है।

कमला एक कमरे से उठती दूसरे में चली जाती । घर उसे बिल्कुल सुनसान नज़र आता । दुनिया से उसे घृणा हो गई थी ।

इम्तिहान आया लेकिन कमला उसमें शामिल नहीं हुई । अब उसे इम्तिहान पास करने की बिल्कुल चाह न थी ।

कमला पलंग पर लेटी कुछ सोच रही थी । पुजारी जी मन्दिर से लौटे और बाहर से आवाज़ लगाई "कमला ।"

कमला चुप रही ।

"कमला मेरी बिटिया, बोलती क्यों नहीं ।"

"हां पिता जी" धीरे से कमला ने कहा ।

"इधर आ बेटा, देख क्या रचना है ।"

कमला धीरे से उठी और उस कमरे में जहां पुजारी जी थे गई ।

"देखो कमला कितने सुन्दर बंलूगड़े हैं । ऐसा मालूम होता है जैसे बर्फ़ के बने हों ।"

कमला ने एक उठाया । उसकी आंखें अभी बन्द थीं । मां ने कुछ नहीं कहा । कमला को नये खिलौने मिल गये । वह उनके लिये दूध लेने गई । एक छोटी सी चारपाई पर उसने उनके लिए एक पुराना गद्दा बिछाया । एक का नाम उसने रक्खा "चमचम ।" उसके माथे पर एक लम्बा भूरा दाग़ और वह बहुत सुन्दर था । दूसरा था "डी डी" वह क्यों था "डी डी" हम नहीं जानते और तीसरी थी "गुड़िया" यह थी सब की रानी ।

पुचकार कर उसने चमचम, डीडी और गुड़िया को बुलाया । एक प्याले में दूध भर कर उसने उनके सामने रख दिया । बच्चों की मां बाहर चली गयी थी । पड़ोसी पांडे की मुर्गियां बाहर फिर रही थीं । पांडे के लड़के

ने देखा तो दौड़ता हुआ अन्दर गया और दो नली बंदूक ला उसे वहीं ढ़ेर कर दिया ।

चमचम, डी डी, गुड़िया की मां मर गई लेकिन कमला ने उन्हें महसूस न होने दिया । वह उन्हें खिलाती, पालती और अपने पलंग के पास सुलाती ।

वह अपने नये खिलौनों के चाव में अपने टूटे हुए पुराने खिलौने को भूल गई ।

हरि

जन

"बिलासपुर में धूम मच गई । नीचों ने अपनी आबादी में खूब सफ़ाई की । एक हफ़्ते के बाद ऐसा मालूम होता था कि शायद किसी ने नहला दिया है । एक दिन सब अछूत नहा धोकर संतोष के साथ हनुमान जी के दर्शन करने मन्दिर की तरफ़ चले ।

ब्राह्मणों को पहिले ही सूचना मिल चुकी थी । वे वहां पर पूरी ताक़त में इकट्ठा थे । संतोष ने आगे बढ़ कर एक बुड्ढे ब्राह्मण को जो मन्दिर का पुजारी कहा जाता था प्रणाम किया । परन्तु उसने घृणा से मुंह मोड़ लिया । ब्राह्मणों की ओर मुंह कर संतोष ने कहा "महाशय गण हम हनुमान जी की पूजा करना चाहते हैं ।"

"नीच मन्दिर के अन्दर आकर मन्दिर को अपवित्र नहीं कर सकते ।"

"यह आपका धर्म है। हमारे अन्दर आने से आपका मन्दिर अपवित्र न हो जाएगा।"

"नहीं, हम तुम नीचों को मन्दिर में नहीं जाने देंगे।" आंखें लाल लाल कर बुड्ढे ने कहा।

"मार दो, पकड़ लो, तोड़ दो" बहुत सी आवाजें आईं।

"भाइयो" अछूतों की ओर मुंह कर संतोष ने कहा "हमें इन पूज्य सज्जनों पर गुस्सा नहीं करना चाहिए। ये बड़े हैं, विद्वान् हैं। अगर हम क्रोध से काम लें तो यह ठीक न होगा। हमें तो प्रेम से काम लेना है। फिर ब्राह्मणों की तरफ़ मुड़कर बोले "पूज्य सज्जनों, अब हम अछूत नहीं हैं हरिजन हैं। पिछले बनाए हुए रस्म-रिवाजों ने हमें बहुत नीचे गिरा दिया था। परन्तु अब हम अपनी जगह हासिल करने के लिए उठ बैठे हैं। हम हिन्दू हैं इस लिए हम मन्दिर में आ सकते हैं। आप सज्जन ईश्वर भक्त हैं, आप हम पर ऐसे अत्याचार न करें। हम सब आपके छोटे भाई हैं।"

"हम सब कुछ मान सकते हैं परन्तु यह नहीं। अपनी जान रहते मन्दिर को अपवित्र न होने देंगे।"

"महाशय, आप भूल कर रहे हैं, आप को वह समय स्मरण है जो व्यतीत हो गया है। अब हम लोग अछूत नहीं हैं हममें अब बुद्धि आ गई है। अब हम अपनी खोई हुई ताक़त पाने के लिए संगठित हो गये हैं। आपने जो हम पर अत्याचार किये हैं उनका बदला लेना हम नहीं चाहते। हम अपने निश्चय से हरगिज पीछे नहीं हटेंगे। अगर आप हमारी बात मान जाएंगे और हम गिरे हुओं को ऊपर उठालें तो आपका यह बड़ा उपकार होगा।"

"नहीं! नहीं!!"

"अभी तक हम बे जबान थे, चुप थे, परन्तु अब हम में ताक़त आ गई है। हम आगे बढ़ेंगे और हमें इस रास्ते पर बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। भारत में एक आन्दोलन होगा जिसका कारण तुम होगे। फिर हम अछूत नहीं कहलाएंगे।"

"ऐसा कभी नहीं हो सकता। भेड़िया शेर नहीं बन सकता। कौआ मोर के पंख लगा कर मोर कभी नहीं बन सकता। जो जहां उत्पन्न होता है उसकी शोभा वहीं होती है।"

"जब भेड़िया पैदा होता है तो वह भेड़िया नजर आता है। यही हाल दूसरे जानवरों का है। परन्तु सज्जन महाशय क्या आप दो बालकों को देख कर यह बता सकते हैं कि कौन ब्राह्मण और कौन नीच है।"

सब चुप थे।

"पुराने जमाने के ऋषियों ने जो किया वह उस समय के लिए ठीक था। परन्तु अब समय बदल गया है और हम सब को समय के मुताबिक चलना चाहिये। हम अपने खोए हुए हक वापस लेंगे। और अवश्य लेंगे।"

बड़ा शोर गुल मचा। ब्राह्मण बहुत कम थे कुछ डर गये। किसी ने दर्वाजा बन्द करना चाहा परन्तु दो चार हरिजन पहिले ही पहुंच गये।

दूसरे दिन अखबारों में निकला कि बिलासपुर के ब्राह्मणों ने मन्दिर के द्वार हरिजनों के लिए खोल दिये।

सब ने खुशी मनाई। हरिजनों ने अपनी जीत पर, ब्राह्मणों ने अपनी बड़ाई पर।

स

गा

ई

समय व्यतीत होते देर नहीं लगती। परन्तु दुखिया का समय बड़ी मुश्किल से बीतता है। हर घड़ी उसके लिए एक दिन के समान होती है। जैसे-जैसे दिन गुजरते जाते हैं वैसे वैसे दुःख भी मद्धम पड़ता जाता है।

कमला के दुःख के दिन पहिले तो बड़ी कठिनता से गुज़रे फिर चमचम, डी डी और गुड़िया खेलने को मिल गये। एक साल, दो साल गुज़रा। कमला की आंखों के सामने का सीन बिल्कुल बदल गया। संतोष से वह प्रेम करती थी परन्तु अब उसका प्रेम मानवी प्रेम नहीं था। संतोष उसकी आंखों के सामने देवता के समान थे। उनके अच्छे कामों का जिक्र अखबारों में पढ़ कर वह प्रसन्न होती।

संतोष को नासिक से गये चौथा वर्ष था। शाम को कमला बाग

में घूम रही थी कि पिता जी अन्दर से आये और उसके साथ कदम मिला चलने लगे ।

पुजारी जी—"कहो बेटा क्या सोच रही हो।"

कमला—"कुछ नहीं ।"

पुजारी जी—"कमला"

कमला—"हां पिता जी"

पुजारी जी—"मुझे तुम से एक बहुत जरूरी बात पूछना है ।"

कमला—"क्या ।"

पुजारी जी—"मैंने तुम्हारे—तुम्हारे लिए एक वर ढूंढ़ा है ।"

कमला ताज्जुब से चुप हो पिता जी की ओर देखने लगी ।

पुजारी जी—"बिटिया वर बहुत सुन्दर है । उसके पिता बड़े अमीर हैं । उनके यहां दो मोटरें और दो गाड़ियां हैं ।"

कमला (गुस्से से)—"मुझे कुछ नहीं चाहिए ।"

पुजारी जी—"तू अभी नासमझ है । धन सम्पत्ति के बिना इस दुनियां में कोई किसी को नहीं पूछता ।"

कमला—"मुझे इनकी जरूरत नहीं है ।"

पुजारी जी—"भारत की लड़कियां बड़ों का कहना नहीं मोड़ा करतीं । तुम्हें मेरा कहना मानना होगा ।"

कमला (रोती हुई)—"परन्तु मैं अभी शादी———।"

पुजारी जी—"क्यों नहीं ।"

कमला—"मैं आपको अकेला नहीं छोड़ सकती ।"

पुजारी जी—"तू मेरी फ़िक्र मत कर । सब मुंह में उंगलियां दे रहे हैं कहते हैं इतनी बड़ी कन्या हो गई अभी तक हाथ नहीं रंगे ।"

कमला—"पिता जी आप दूसरों की बातों में न आया करें।"

पुजारी जी—"मैं उनकी बातों में नहीं आता। परन्तु वे जो कह रहे हैं सच है।"

कमला—"परन्तु मैंने विवाह न करने का निश्चय कर लिया है। आप मेरा प्रण तुड़वाने की व्यर्थ कोशिश न करें।"

पुजारी जी (ज़रा क्रोध से)—"मैं तुम्हारी अन्ट सन्ट बातें सुनते सुनते बहुत तंग आ गया हूँ। अब मैं उन्हें जवाब नहीं दे सकता।"

कमला—"इकरार करने के लिए आप से किसने कहा था।"

पुजारी जी (गुस्से से) "मुझे तेरी हां-नांह की आवश्यकता नहीं है। तुझे वही करना पड़ेगा जो मैं कहूंगा। भारतीय-कन्या को यही शोभा देता है।"

कमला (रोते हुए)—"तो मेरा गला घोंट कर गङ्गा में क्यों नहीं बहा देते।"

पुजारी जी—(कमला के सिर पर हाथ फेरते हुए) "नासमझ"

कमला—"जिस आदमी को मैं नहीं जानती, जिससे मुझे प्रेम नहीं उससे मैं कैसे विवाह कर लूंगी।"

पुजारी जी—"तुमने पाश्चात्य शिक्षा से यही लाभ उठाया है। ऐसी बातें भारत की कन्या को शोभा नहीं देतीं। कन्या के लिये वर ढूंढना उसके माता-पिता का धर्म है।"

कमला—"परन्तु मैं तो किसी और से प्रेम करती हूं।"

पुजारी जी—(अचानक)—"किससे ?"

कमला—(रोते हुए)—"सं–तो–ष।"

पुजारी जी को तो मानों सांप सूंघ गया। पारा एक दम एक सौ एक डिगरी तक पहुंच गया। वह अगर लड़का होती तो उसी दम कचूमर निकाल

देते । परन्तु यह थी उसकी एकलौती एक मात्र आशा कमला । वह उसे मार न सके । आंखें निकाल कर बोले "अभी तक तू संतोष की याद कर रही है । और कोई होता तो जबान निकाल लेता उसकी । तुझे ऐसी बातें करते लज्जा नहीं आती । क्या एक ब्राह्मण लड़की एक नीच से विवाह कर सकती है । हरे भगवान्, अगर भारत में यह होने लगे तो अभी प्रलय आ जाय । जितना तुमसे प्रेम करता हूं जितनी सहानुभूति दिखाता हूं । उतना ही तुम मेरे सिर पर चढ़ती जाती हो । लात का उल्लू बात से नहीं मानता ।"

कमला रो रही थी ।

"कमला मैं कुछ और सुनना नहीं चाहता । ऐसी फिजूल बातें तुम फिर अपनी जबान पर मत लाना । मैं जो कहता हूं बिना हूं-हां किये तुम्हें वही करना होगा ।

कमला (रोतेहुये) "मैं विवाह नहीं करूंगी ।"

पुजारी जी (गुस्सेसे)—"क्या"

कमला—"मैं विवाह नहीं करूंगी ।"

पुजारी जी—"यह तेरे हाथ में नहीं है ।"

सरकारी सांड

कमला की सगाई हुए छः महीने हो गये। वह बहुत रोई बहुत कहा सुना लेकिन किसी के कान पर जूँ तक न रेंगी। सबने अनसुनी सी करदी। फिर उसने सोचा रंगने दो हाथ। इससे मेरा क्या बिगड़ेगा। इस तरह शादी तो हो नहीं सकती।

इलाहाबाद के राजा बाबू के लड़के से नाता हुआ था। बड़े अमीर थे। लाखों रुपये की सम्पत्ति और फिर एक ही लड़का। मुहल्ले भर की औरतें आतीं, गातीं, तारीफें करतीं सहेलियां आवाज़ें कसतीं परन्तु कमला कमरे का दरवाजा बन्द किये अपने विचारों में मग्न रोती रहती।

जब भी कभी पुजारी जी शादी का नाम लेते। कमला विष खाकर आत्महत्या करने की धमकी देती। और अभी जल्दी भी क्या थी। राजा

बाबू तो शादी के लिए बहुत जल्दी कर रहे थे, लेकिन छोटे राजा साहब इतनी जल्दी अपने पैरों में जंजीर नहीं डालना चाहते थे। बीवी आ जायेगी तो शायद गाना सुनने से रोके। बाहर न जाने दे और फिर इन्हें तो और ही चस्का पड़ा हुआ था। एक स्त्री से प्रेम करना उनके लिए गुलामी था। रुपया पास था। शहर के चार-पांच लफङ्गे दोस्त थे। खूब गुल्छर्रे उड़ाये जाते थे। आज खुर्शीद बेगम का तो कल चम्पा कली का नाच होता। शराब उड़ती और छोटे राजा साहब मस्त रहते।

बड़े राजा साहब चाहते थे कि शादी जल्दी हो जाय तो लड़का सुधर जाय। अभी नादान है। जवानी दीवानी है। जब बहू आ जायगी सब ठीक कर लेगी। यह नहीं जानते थे कि बिगड़े हुए सांड को सुधारना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

छोटे राजा साहब का तो पूछना ही क्या। जब शादी की बात होती तो बिचके हुए सांड की तरह सीधे झपटते। जो जी में आता कह डालते। एक दफ़ा तो मारपीट तक की नौबत आगई। बड़े राजा साहब डर गये। अरे इतना हट्टा-कट्टा है कभी मार बैठा तो मैं घर का रहूंगा न घाट का। सब देखने वाले क्या कहेंगे? मगर डरते हुए भी उन्होंने हार न मानी। गुस्से से बोले "कुत्ते मैं तुझे रोटी तक का मोहताज बना सकता हूं। तू जानता है?"

छोटे राजा–हां जानता हूं कि तुम्हारी अक्ल सठिया गई है। तभी तो ऐसी बातें करते हो। धोती की ऐंठ में बांध कर नर्क में ले जाना इस धन को। आजसे मैं तुम्हारे धन पर थूकूंगा भी नहीं, जाता हूं मजदूरी कर लूंगा।"

वाह! भाई छोटे राजा वाह!! क्या दांव मारा! ऐसी चोट मारी है कि बड़े राजा चोट खाते ही चारों खाने चित्त हो गए। मजाल क्या कि बात भी करें।

छोटे राजा उठे और दर्वाजे की तरफ़ बढ़े। बुड्ढे ने अपने सहारे की लकड़ी हाथ से छूटते देख उसे जोर से पकड़ लिया और बोले "नहीं बेटा नहीं। तुम इतनी जल्दी नाराज हो गये। मैं तो तुम्हारी भलाई के लिए कह रहा था। अच्छा! तुम्हारी मर्जी, जब चाहे शादी कर लेना।"

छोटे राजा दौड़ कर दोस्तों और यारों के पास गये और खुशखबरी कह सुनाई।

कल्लन मियां बोले "वाह भइया अब क्या। खूब मारा!"

चप्कन मियां "आज फिर कहां गुलछर्रे उड़ेंगे?"

खड़पल्ले राम "चलो फ़ातिया बेगम मर रहीं होंगी।"

सन्त

जी

चार साल तक संतोष ने मध्यप्रांत का दौरा किया। छोटे २ गांवों में उन्हें बड़ी जल्दी सफलता प्राप्त हुई। यहां नीच ज्यादा थे और बहुत दुःखी भी। जब उनकी हिम्मत बंधाई गई तो उन्हें रोकता कौन। ब्राह्मण भी अब पुरानी बातें भूलते जा रहे थे।

संतोष को प्यार से सब सन्त जी कहते। उन्हें भी अपने प्रचार पर गौरव था और जिस मनुष्य को अपने काम में गौरव होता है उसके मुख पर एक ज्योति छा जाती है और यह ज्योति हर एक को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। संतोष एक गांव में एक हफ्ते से अधिक नहीं ठहरते थे परन्तु एक ही हफ्ते में उस गांव में एक नई जिन्दगी पड़ जाती। दुःख की जगह वहां सुख का वास हो जाता और गन्दगी की जगह सफाई ले लेती।

नीच तो क्या ब्राह्मण भी सन्त जी के दर्शन करने आते।

कमला का प्रेम उन्होंने अपने हृदय में छिपा लिया। दुःख शान्त करने के लिए मनुष्य को कोई ऐसा कार्य करना पड़ता है जिससे उसका दुःख शान्त हो सके। कमला को मिल गये थे खेलने के लिए चमचम, डी डी और गुड़िया, संतोष को जुबान वाले बेजुबान अछूत! कमला के बलूं-गड़े बड़े हुए। म्याऊं २ करते भाग गये। संतोष के अछूत उठे, बढ़े और फिर संतोष उन्हें छोड़ दूसरों को उठाने आगे बढ़े।

मध्यप्रांत में तो उन्हें ज्यादा आपत्ति न पड़ी। परन्तु जैसे ही वे संयुक्त प्रांत में बढ़े उन्हें ज्यादा कठिनता पड़ने लगी। यहां नीचों की गिनती कुछ कम हो गई। ब्राह्मण और क्षत्री बढ़ गये। ब्राह्मण तो कभी २ डर जाते थे परन्तु ठाकुर जिन्होंने अपनी जिन्दगी भर लाठी का साथ नहीं छोड़ा कब इन मुट्ठी भर नीचों की धमकी में आते।

सन्त जी आ रहे हैं। दूर २ तक समाचार फैल गया। नीच खुशी के मारे फूले नहीं समाये। काम काज के बाद सब इकट्ठा हो जाते और घर बार की सफाई करते। सन्त जी ने इन नीचों के हृदय में क्यों इतना प्रभाव जमा लिया था? बहुत कम मनुष्य जानते हैं। हम दूसरों की सहानुभूति और प्रेम तभी प्राप्त कर सकते हैं जब उनकी तरह रहें। उनके दुःख सुख में हिस्सा लें और अपनी जान जोखम में डाल उनकी तकलीफ़ों को दूर करने की कोशिश करें।

अगर एक मनुष्य जिसके पास लाखों रुपये हों, घर बैठे कुछ दान कर दे तो कोई उसकी क़दर नहीं करता। एक ग़रीब जिसके पास थोड़े रुपये हों वक्त पर किसी को कुछ दे दे तो वह हमेशा के लिये उसका कृतज्ञ हो जाता है और फिर मनुष्य जब अपने प्राण दूसरों पर न्योछावर करदे तो उसका क्या कहना। सब पुतलियों की तरह उसकी उंगलियों पर नाचते हैं। ढोंग रचने वाले यह देख कुढ़ते और हर प्रकार से कोशिश करते हैं कि अपनी ताकत न खो बैठें। घर में बजाई हुई तूती बहुत दूर सुनाई नहीं

देती । नीच भी इतना आडम्बर समझ सकते हैं । कोई कितने पानी में हो बताने की जरूरत नहीं । जो नेता यह समझते हैं कि घर में बैठे २, बिना दु:ख भोगे, नेता बने रहेंगे, धोखे में हैं । नेता बनने के लिए पहली आवश्यकता है, कुरबानी और वह भी बहुत बड़ी कुर्बानी जिसे दूसरे देख कर सबक़ हासिल कर सकें । और कुरबानी करने को तैय्यार हो जाएं । जब सेवा से मतलब लाभ उठाना होता है तो वह सेवा कुरबानी नहीं कही जा सकती वह है ऊंचे दर्जे की मक्कारी । शेरों की खालें पहने ऐसे मक्कार भारत में भी बहुत हैं ।

मनिकपुर के ब्राह्मणों को भी पता लगा कि सन्त जी यहां आरहे हैं । उन्होंने सब तैयारियां करलीं । पुलिस का एक जत्था भी इलाहाबाद से आगया । ब्राह्मणों ने हरिजनों को बड़ी धमकियां दीं । गांव से बाहर निकाल देने का डर दिखाया । लेकिन किसी ने परवाह न की । सन्त जी पैदल आए । उनके पीछे पीछे बहुत से हरिजनों की भीड़ थी जो खुशी से नाच रहे थे क्योंकि अब उन्हें एक नई दुनिया नजर आने लग गई थी । वे भजन गाते गांव में पहुंचे । सैंकड़ों हरिजन मर्द औरतें उनके पैरों पर गिर पड़े । दीवारों और छतों पर मनुष्य इस भांति चिपटे हुए थे जैसे छत्ते पर शहद की मक्खियां । सब ने फूल फेंके । उनके विरोधी ब्राह्मण भी अपने हृदय की कामनाएं रोक न सके और उन्होंने भी दर्वाजे से छिप छिप कर उन्हें देखा ।

मुठ

भेड़

रात को बड़ा जलसा हुआ, और यह निश्चय पाया कि कल सवेरे हनुमान जी के मन्दिर में पूजा की जाय। कई ने कहा पुलिस आई है परन्तु सन्त जी ने कहा "हम उनसे नहीं डरते। सचाई रोब से नहीं दबा करती। जो काम हम कर रहे हैं ठीक है, और कोई उसे नहीं रोक सकता। जिन्हें किसी का डर है वे शामिल न हों।"

"कुछ डर नाहीं हम नाहीं डरब।" सैंकड़ों ने कहा।

दूसरे दिन छ: सौ आदमियों का जुलूस निकला। खूब हुल्लड़ मच रहा था। सन्त जी फूलों का हार गले में डाले सब से आगे चल रहे थे। सात बजे के लगभग जुलूस हनुमान जी के मन्दिर के क़रीब पहुंचा। पुलिस ने चारों तरफ़ घेरा डाल रक्खा था। दारोगा साहब ने ज़ोर से पुकार कर कहा कि जुलूस आगे नहीं जा सकता।

ब्राह्मण मन्दिर के चबूतरे पर बैठे यह दृश्य देख खुश हो रहे थे वे अपनी कमजोरी पर लज्जित न थे। अपने भाइयों को अलग और दुःख में देखा वे गौरव की बात समझ रहे थे।

हरिजन मन्दिर के चारों ओर धरना देकर बैठ गये। शाम हो गई परन्तु हरिजन अपनी जगह से नहीं हटे। सन्त जी के साथ सब भजन गा रहे थे। सड़क पर खाना बनाया गया और सबने खाया ब्राह्मणों के मुंह में यह देख पानी आगया। बेचारों ने दिन भर कुछ खाया न था। भूख से पेट में चूहे कूद रहे थे। परन्तु वे नीच के हाथ का खाने से मरना अच्छा समझते थे। वाह री उनकी बुद्धि।

रात सारी सड़क पर कटगई, हरिजनों को खूब भजन गाते, पुलिस को पहरा देते। ब्राह्मण सज्जनों को भूखसे पल भर भी नींद न आई।

सवेरा हुआ तो भी वही हाल था। यह आशा करना कि हरिजन भाग जायेंगे, नितान्त मूर्खता थी। ब्राह्मणों को निश्चय हो गया कि शायद भूख से यहीं देह त्याग देना पड़े। आखिर तंग आकर पुजारी जी ने हाथ पैर जोड़े और कहा "हुजूर रास्ता बनावें ताकि घर जाकर रोटी तो खा आवें"

कोतवाल साहब—मैं बेबस हूं। कुछ नहीं कर सकता।

पुजारी जी (हाथ जोड़ते हुए) नहीं हुजूर आप की बड़ी दया होगी।

कोतवाल—"मेरे पास कुल बीस सिपाही हैं और उधर हैं छः सौ।"

पुजारी जी—"(थैली देते हुए) हुजूर यह लीजिये।"

कोतवाल—"(थैली लेते हुए) कितने हैं?"

पुजारी जी—"हुजूर प—पचास रुपये।"

कोतवाल—"सौ रुपये से कम में तो मैं बात ही न करूंगा।"

पुजारी जी (दीनता से)—"हमारे पास और तो हैं नहीं।"

कोतवाल—"तो पचास रुपये के लिए मैं अपनी जान जोखम में नहीं डाल सकता।" (थैली फेंक कोतवाल साहब एक ओर चल दिये)।

पुजारी जी दौड़े गये। पचास रुपये और ले आये। कोतवाल साहब अपनी जेब गरम कर भीड़ के पास पहुंचे और कहने लगे "यह भीड़ ग़ैर क़ानूनी क़रार दी जाती है। सब आदमियों को हट जाना चाहिए नहीं तो पुलिस को ताकत से काम लेना पड़ेगा।"

कोई न हिला।

"महाशय" सन्त जी की तरफ़ मुंह करते हुए "आपके लिये यह बेहतर होगा कि आप यहां से चले जांय। मन्दिर ब्राह्मणों की जायदाद है। किसी की मलकियत पर जबरदस्ती क़ब्ज़ा करना ग़ैर कानूनी है।"

सन्त जी—"जो आप कहते हैं बिलकुल ग़ल्त है। मन्दिर ब्राह्मणों की नहीं, सारे हिन्दुओं की जायदाद है। हमने कदम आगे बढ़ाया है, और आगे ही बढ़ते रहेंगे। बहादुरों का काम पीछे हटना नहीं होता। या तो हनुमान जी के दर्शन कर हम यहां से जाएंगे या हमारी लाशें यहां से जाएंगी।"

कोतवाल—"तो इसकी सारी जिम्मेवारी आप पर रहेगी।"

सन्त जी—"यहां पर हर एक सिपाही है जो अपने हक के लिये लड़ रहा है।"

कोतवाल—"लेकिन आपको रास्ता छोड़ना होगा।"

सन्त जी—"हरगिज नहीं।"

कोतवाल—"हमें जबरदस्ती करनी पड़ेगा।"

सन्त जी—"हम नहीं डरते।"

कोतवाल—(सिपाहियों की ओर इशारा करके) "हटा दो सब को। अगर नहीं हटते तो लाठी चलाओ।"

पुलिस वाले भी थे सब ऊंच जाति के आदमी। ऐसा मौका कब हाथ से जाने देते। पैतरे बदल २ बैठे हुए निहत्थों पर क्या २ वार किये कि कुछ मिनटों में ही सैंकड़ों आदमियों को अधमरा कर सड़क पर लिटा दिया। भीड़ में गड़बड़ पड़ गई। किसी ने एक ईंट उठा कर कोतवाल साहब की तरफ़ फेंकी। ठीक सिर में लगी और कोतवाल साहब हाय कर वहीं बैठ गये। हरिजनों को जोश आ गया। वे सब मन्दिर की तरफ़ बढ़े। संतोष उन्हें खड़े होकर रोकने की कोशिश कर रहे थे परन्तु शोर में उनकी बात कुछ सुनाई नहीं पड़ती थी। मार दो, मार दो की आवाजें आ रही थीं। कोतवाल साहब ने देखा कि हालत काबू के बाहर होती जा रही है और ब्राह्मणों की जानें ख़तरे में हैं। हुकम दिया गोली चला दो।

कईयों के गोलियां लगीं। सन्त जी भी गिर पड़े। सब तरफ़ रोने और चिल्लाने की आवाजें आने लगीं।

सब भाग गए पीछे पड़ी रह गईं कुछ बेज़बान तड़पती हुई लाशें।

बलि

दान

कमला बहुत रोई। परन्तु अब रोये क्या होता? कई दिन वह बिस्तर पर बीमार पड़ी रही, सोचती रही, रोती रही। दुःख से उसका हृदय फटा जा रहा था।

पुजारी जी ने उस से इन दिनों बात तक न की। वह जानते थे जलती हुई आग में तेल डालने से ज्वाला और बढ़ जायगी। इस ज्वाला को धीरे-धीरे आप ही मद्धम हो जाने दो। फिर आंसुओं की बौछार कर उसे बुझा देंगे।

उन्हें संतोष की मृत्यु का समाचार सुन कर बहुत दुःख हुआ। अरे भाई किसी जानवर की मृत्यु होती है तो भी दुःख होता है यह तो फिर भी मनुष्य है। पुजारी जी अच्छी तरह जानते थे कि उनकी हत्या में उनका

कितना हाथ है। परन्तु इस बात से खुश थे कि छुटकारा मिल गया। अब कमला रोज़ २ यह राम कहानी सुना तंग न करेगी।

कमला रोई, चिल्लाई। पुजारी जी भी रोये, विलाप किया और फिर कमला को मना ही लिया। कमला ने हां करदी, सिर्फ़ पिता का आग्रह और दुःख देख कर। परन्तु उसने निश्चय कर लिया कि जीवन रहते किसी और से प्रेम नहीं करेगी।

खूब बाजे बजे, तूतियां बजीं और कमला की शादी छोटे राजा के साथ बड़े धूम धाम से हो गई। छोटे राजा, कल्लन मियां और खड़पल्ले राम ने खूब गुलछर्रे उड़ाए और मस्त हाथी की भांति झूमने लगे।

कमला ससुराल पहुंच गई। बहुत सी औरतें आईं। गाना बजाना हुआ। मुंह दिखाई के रुपये मिले परन्तु कमला को सिवाय अन्धकार के कुछ नजर न आया। यह हंसी मज़ाक उसके दिल में सुइयों की तरह चुभ रहा था।

रात हुई। सब औरतें चली गइ। कमला को शयनागार में पहुंचा दरवाज़ा बन्द कर दिया गया। यह इस खुशी के अवसर पर भी रो रही थी। क्यों? उसने अपनी आंसुओं की धारा को रोकने का प्रयत्न किया। वह अपने आप को धिक्कार रही थी कि उसने यह दिन देखने की बजाय आत्महत्या क्यों न कर ली!

दरवाज़ा खुला और बन्द हो गया। शराब में मस्त झूमते झामते छोटे राजा अन्दर आए और पलंग पर बैठ गये।

कमला पलंग से उठ कर कुछ दूर खड़ी यह नया स्वांग देख रही थी। उसका दुःख घृणा में बदल गया। वह वहां से भाग जाना चाहती थी। लेकिन उसके पैरों में बिलकुल बल न रहा। वह एक बेबस चिड़िया की भांति जाल में फंस गई थी। जबकि इस जाल में फंसने के लिए उसे कोई लोभ नहीं दिखाया गया था। उसे तो उसके पिता ने ही इस भभकती

हुई ज्वाला में धकेला था। परकटी चिड़िया की न्याईं यह फड़फड़ा रही थी। परन्तु उड़ नहीं सकती थी। वह किसे कोसती, किसके सामने रोती, कोई सुनने वाला न था।

छोटे राजा बड़ी देर तक कमला की ओर देखते रहे और चतुर आंखों से परखते रहे कि कितनी सुन्दर है। कुछ भी हो खुरशीद की सी नाक नहीं है और न ही चम्पा की सी आंखें। हां रंग में अख्तरी से बाज़ी ज़रूर ले गई है। लेकिन जन्नतबानों को तो छू भी नहीं सकती और देखो खड़ी कैसे ह। अभी अगर चमेली होती तो मजा आ जाता। नाज़ और नखरे से दिल खुश कर देती। और जिस तरह रोज़ की आदत थी उन्होंने कमला को उंगली के इशारे से अपनी तरफ़ बुलाया। लेकिन वह हिली भी नहीं। छोटे राजा ने फिर इशारा किया परन्तु कमला ने घृणा से मुंह मोड़ लिया। कमला की यह ढिठाई देख छोटे राजा को गुस्सा आ गया। आज तक किसी औरत ने भी उनकी बात नहीं मोड़ी थी। आज यह उनकी विवाहिता स्त्री है जो उनका कहना नहीं मानती।

छोटे राजा—"इधर (झूमते हुए) आओ।"

कमला ने अनसुनी कर दी। छोटे राजा उठे और कमला की तरफ़ बढ़े परन्तु वह एक तरफ़ को हट गई। छोटे राजा शराब में मस्त कुर्सी से टकरा कर गिर पड़े। कमला की हंसी निकल गई, वह थी घृणा से भरी हुई हंसी।

छोटे राजा उठे और गुस्से से कमला की तरफ़ दौड़े। कमला दर्वाज़े के पास पहुंच खड़ी हो गई। दर्वाजा बन्द था। छोटे राजा ने उसका हाथ पकड़ लिया और बोले "अब कहां जाओगी ?"

कमला चुप थी।

छोटे राजा—"तुम ऐसी तो मैंने सैकड़ों देखीं हैं। शादी करा कर (हा हा) अब भागने का ख्याल आया है। कहां जाइयेगा ?"

कमला—"जहां भाग्य ले जावेगा ।"

छोटे राजा—(हंसते हुए) "तेरे भाग्य तो यहां ले आए हैं ।"

कमला चुप थी । उसने झटका दे कर अपनी बांह छुड़ा ली और भीगी बिल्ली की तरह दर्वाजे के पास खड़ी रही । छोटे राजा की कामवासना बहुत बढ़ रही थी । उन्होंने प्रेम से कहा "तुम मेरी हृदयेश्वरी हो, आओ मेरे पास बैठो ।"

कमला वहीं खड़ी रही ।

"तुम्हें मेरा कहना मानना होगा । तुम मेरी स्त्री हो । तुम्हें मुझसे प्रेम करना होगा ।"

कमला ने घृणा से कहा "मैं आपसे प्रेम नहीं कर सकती ।"

छोटे राजा (गुस्से से)—"तू मेरी स्त्री है ।"

कमला—"आप मेरा शरीर नष्ट कर सकते हो । परन्तु हृदय नहीं।"

छोटे राजा—"तू मुझसे प्रेम नहीं करेगी ?"

कमला "नहीं ! हरगिज नहीं !!"

छोटे राजा—हा ! हा !! हा !!!

चम्पा

कली

छोटे राजा को क्रोध चढ़ आया। आज तक किसी ने उनका इतना अपमान नहीं किया था। अगर कोई करता उसकी जिह्वा निकलवा लेते। उन्होंने सोचा चलो इसे सबक़ सिखाएं। सीधे कल्लन मियां के यहां पहुंचे।

कल्लन—"छोटे राजा साहब, यहां कैसे ?"

छोटे राजा—"वह साली मेरा कहना नहीं मानती। उसे जताने आया हूं कि उसके बिना मैं मर नहीं जाऊंगा।"

कल्लन—"देखो उसकी भौंह। कल की छोकरी और आप का कहा नहीं मानती।"

छोटे राजा—"जिन्दा रहें हमारी बेगमात फिर हमें किसकी पर्वाह है।"

कल्लन—"जी हां ! पैसा खर्चिये और ताजा दूध हासिल है ।"

छोटे राजा—"चलो कल्लन चलें ।"

दोनों मोटर में बैठ तेजी से चम्पा के यहां पहुंचे । आज वह खाली थी । इसलिए जल्दी सो गई थी । छोटे राजा इस समय आ टपकेंगे, इसका उसे स्वप्न में भी ख्याल न था । चम्पा के मकान में और बहुत सी लड़कियां थीं जिनका पैसा कमाने के सिवा और कोई काम नहीं था । उनकी दिली अभिलाषायें बिल्कुल नष्ट हो गई थीं । शाम हुई और छज्जे पर बनाव शृंगार कर आ बैठीं । जितने ग्राहक आते सबको खुश करना पड़ता किसी को दर्वाजे पर आया मोड़ नहीं सकतीं । यह तो उनका इख्त्यार ही नहीं । वे तो सिर्फ़ पैसा बनाने वाली मशीनें हैं । जिस दिन उनकी तबियत खराब होती है और दिल नहीं चाहता तो दल्ले उन्हें खाना नहीं देते । आखिर तंग आकर उन्हें फिर छज्जे पर आना पड़ता है । उनमें जो सुन्दर हैं उनको कम दुःख उठाने पड़ते हैं क्योंकि एक तो उनके बहुत ग्राहक होते हैं और फिर वे पैसे भी ज्यादा लेती हैं । पर जब बुढ़ापा सामने आता है तो वे डर से कांप उठती हैं उन्हें तब कोई नहीं पूछता, दल्ले खाना नहीं देते और बिगड़ी हुई मशीन की तरह उन्हें फेंक दिया जाता है ।

कल्लन मियां ने दर्वाजा खटखटाया । दल्ले ने अन्दर से कहा "कौन मुआ इस वक्त जगाता है ।"

कल्लन मियां "ओबे नसूड़िये, छोटे राजा आए हैं, छोटे राजा !"

दल्ला—"अरे बाप रे बाप ! गज़ब हो गया । ओ चम्पा ! ओ चमेली ! ! उठो छोटे राजा आए हैं" और खुद दौड़ता हुआ नीचे आया । दर्वाजा खोल झुक कर छोटे राजा को सलाम किया । "हुजूर कसूर माफ़ हो गलती हो गई ।"

छोटे राजा ने पीठ पर थपकी देते हुए कहा "कुछ बात नहीं । कहो कोई नया शिकार है ?"

"आइये हुजूर आइये ! अन्दर चलिये, क्या क्या माल है सब अन्दर देखिये । सब आप के सामने हाज़िर किये देता हूं ।"

सब ऊपर चले गये । फ़र्श पर बैठ कर सब को जल्दी-जल्दी तैय्यार होने को कहा ।

दूसरे दल्ले ने शराब की बोतल और चार पांच गिलास ला कर रख दिये । छोटे राजा गोल तकिये का सहारा लगा ताव चढ़ाने लगे । पांच छः रंडियां झुक कर सलाम कर सामने आ बैठीं । छोटे राजा ने कल्लन मियां की तरफ़ देखा और उसने सिर हिलाते हुए उनकी हां में हां मिलादी । उन्होंने गुलज़ार को पसन्द किया, वह वहीं रह गई और बाक़ी अपने भाग्य को कोसतीं फिर सोने को वापिस चली गईं । गुलज़ार को उन्होंने अपने पास बिठा लिया ।

सवेरे तीन बजे के क़रीब छोटे राजा शराब में मस्त कल्लन के साथ चम्पा के घर से बाहर निकले । कल्लन ने बहुत कहा कि आप नशे में चूर हैं । लेकिन वे न माने और शराबी माना भी कब करता है कि वह नशे में है । मोटर स्टार्ट कर चल दिये लेकिन बहुत दूर न गये होंगे कि खम्बे से टक्कर मार दी ।

सूर

दास

जिस घर में कल बाजे बज रहे थे वहीं आज हाहाकार हो रहा है। बड़े राजा तो ग़म के मारे बेहोश पड़े हैं। लेकिन कमला की आंखों से एक आंसू भी नहीं निकला। कइयों ने कहा "बहू का पैर पड़ा है। मनहूस है।" कइयों ने कहा "हम तो पहिले ही जानते थे कि वह कुछ न कुछ कर बैठेगा।" बहुतों ने मुंह में उंगलियां देते हुए कहा "कितनी सुन्दर बहू थी लेकिन नीच को शर्म नहीं आई। पहली रात का भी विचार नहीं किया। बहू तो बिचारी मर जाएगी।"

खबर दो दिन के बाद पुजारी जी को भी लग गई। आये, रोये, अपने और कमला के भाग्य को कोसा और चलते बने।

कमला ने विधवा के वस्त्र धारण कर लिये। बड़े राजा बहुत बीमार हो गये। घर में कमला के सिवा कोई न था। उसने उनकी बड़ी सेवा की

और मौत के मुंह से उन्हें बचा लिया। बड़े राजा पहिले तो उससे घृणा करते थे परन्तु उसके स्नेह और सेवा ने उनका हृदय जीत लिया।

अभी अबला ने क्या सुख देखा था। पहिली ही रात में विधवा होगई। मुझे उस पर दया दिखानी चाहिये। उन्हों ने सोचा होगा?

धीरे धीरे वे कमला से प्रेम करने लगे। उसने थोड़े ही दिन में उनके दिल से छोटे राजा की याद भुला दी और उस जगह अपना कब्ज़ा जमा लिया। पुजारी जी ने कई दफ़ा कमला को बुला भेजा परन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया।

एक दिन दोनों बाग़ में बैठे हुए थे। कमला मधुर स्वर में गाना गा रही थी। बड़े राजा आंखें बन्द किये बड़े ध्यान से सुन रहे थे। गाना खत्म होने पर उन्होंने कमला से पूछा "रानी बिटिया तुम्हें गाने का बहुत शौक है।"

"जी हां पिता जी"

"तुमने गाना कहां से सीखा था बेटा?"

"मैंने गाना सीखा तो कहीं नहीं।"

"मेरा ख्याल है कि तुम्हारे लिए एक मास्टर रख दूं जो तुम्हें गाना सिखाया करे। कहो ठीक है।"

"जैसी आप की मर्ज़ी।"

"अरे बेटा यह मेरी खुशी कैसी? मैं तो तेरे लिये कर रहा हूं।"

"वे मुझे क्या सिखावेंगे?"

"जो तुम कहोगी।"

"अच्छा पहिले तो मैं वायलिन सीखूंगी। आप को भी तो पसन्द है।"

बड़े राजा एक नौकर साथ ले बैठ मोटर पर अन्ध-महाविद्यालय पहुंचे। संचालक से पता लगा कि एक सूरदास बहुत अच्छा गाते हैं। उन्हें

बुलाया गया। उन्होंने राजा साहब को गाना गा कर सुनाया। वायलिन सुन कर राजा साहब खुश हुए। पचास रुपये महीने पर उन्हें रख लिया गया। मोटर में साथ लेकर घर पहुंचे। कमला मोटर की आवाज़ सुन कर बाहर आई।

"रानी बिटिया मैं तुम्हारे लिये मास्टर लाया हूं।

"कहां हैं ?"

सूरदास मोटर से उतरे और नौकर का सहारा ले कर आगे बढ़े। कमला ने तअाजुब से देखा। दौड़ कर कमरे में गई और पलंग पर लेट ज़ोर २ से रोने लगी।

वि
ध
वा

राजा साहब बड़ी देर तक रानी बिटिया के सिरहाने बैठे दिलासा देते रहे। कमला के आंसू बन्द हो गये। किन्तु वह अपने इस रोने का कारण जानने का प्रयत्न कर रही थी। क्या उसकी आंखों ने उसे धोखा दिया। जरूर! इसके अलावा और क्या हो सकता है। धोखा? यह कैसे सम्भव हो सकता है। जिस मूर्ति का वह सदा स्मरण करती है क्या अपनी आंखों से उस नहीं पहिचान सकती? नहीं नहीं! उन्हें मरे तो बहुत दिन हो गये।

नहीं कमला नहीं। तेरी आंखों ने धोखा नहीं खाया। वे हैं तेरे देवता, तेरे प्यारे सं–तो–ष।

नहीं नहीं। मेरी आंखो अब मुझे तुम और मत सताओ। मुझी

हुई ज्वाला फिर भड़का कर तुम्हें क्या लाभ होगा ? मैं उसमें जल मरूंगी। शायद मर कर ही मुझे इस दुःख से छुटकारा मिल जाय।

संतोष तुम जीवित हो। तुम अवश्य जीवित हो। मेरा हृदय कह रहा है तुम जीवित हो। मेरा दिल चाहता है नाचूं, कूदूं। परन्तु मेरा यह उल्लास देखेगा कौन ? संतोष तुम अंधे हो ! तुम अंधे हो गये हो !! तुम अपनी दुःखी कमला का दुःख नहीं देख सकते संतोष ! वह तुम्हारे प्रेम में पागलों की तरह रो रही है। वह कितनी दुबली हो गई है, तुम अनुभव नहीं कर सकते। तुम नहीं देख सकते कि वह आज तुम्हें पा कर कितनी खुश है।

मैं क्या करूं ! मेरा हृदय फट क्यों नहीं जाता। वह यह जान कर कि मैं कौन हूं मुझ से घृणा करने लगेंगे।

ठीक—ठीक मैं उन्हें मालूम ही ना होने दूंगी कि मैं कौन हूं। और फिर———

"रानी बिटिया क्या हाल है ?"

"अच्छा हूं पिताजी" धीरे से कमला ने कहा।

"तुम ने रो रो कर अपना शरीर बहुत दुर्बल कर लिया है ऊपरी दुःख शायद मालूम न हो सकता हो परन्तु हृदय का दुःख छिपाये छिप नहीं सकता। बेटा हम तक्लीफ़ से नहीं डरते। उड़ा हुआ पक्षी फिर हाथ नहीं आता।"

कमला रो रही थी किसी की याद में। राजा साहब रो रहे थे किसी और ख्याल से।

"बेटा तुम्हें चाहिए कि अपना दुःख किसी और की सेवा में भुलादो। तुम्हें हर वक्त रोता और दुःखी देख कर मुझे बहुत दुःख होता है तुम्हीं मेरे जीवन का एक मात्र सहारा हो। तुम दूसरी लड़कियों की तरह हंसो, खेलो और कूदो। मैंने तुम्हारे लिये मास्टर रख दिया है जो तुम्हें गाना सिखाया करेगा। उम्मेद है कि तुम्हारा दिल जल्दी बदल जायगा।"

"नहीं पिताजी मैं उनसे गाना नहीं सीखूंगी" धीरे से कमला ने कहा।

"क्यों ?" आश्चर्य से राजा जी चौंक पड़े ।

"वे अन्धे हैं । उन्हें देख कर मुझे बहुत दु:ख होगा । मैं किसी का दु:ख नहीं देख सकती ।"

"नहीं रानी बिटिया नहीं। दु:खी का दुख दूसरा दु:खी ही जानता है जब दो दु:खी मिल जाते हैं तो अपना अपना दुख भूल जाते हैं ।"

कमला चुप रही ।

"जिस तरह तुमने अपने प्रेम से मेरा दुख भुला कर मेरे हृदय में नई रोशनी पैदा कर दी उसी भांति तुम उस अन्धे को रास्ता दिखा सकती हो ।"

दुःख का राग

सूरदास जी फर्श पर बैठे वायलिन बजा रहे थे। कैसा मधुर राग था? हृदय को खींचे लेता था। रानी बिटिया और राजा साहब चुपके से उनके पास बैठ गये। वह राग खतम हो गया। राजा साहब ने सूरदास को एक गाना गाने के लिये कहा। उन्होंने गाया।

"नहीं पड़त पिया बिन चैन"

कमला के दो चार आंसू निकल पड़े। बिना किसी के देखे उसने उन्हें पोंछ डाला। राजा साहब गाना सुन कर और कमला को गाना सीखने को कह अन्दर चले गये।

"आप क्या सीखियेगा?" धीरे से अन्धे ने कहा। उसके हर वाक्य में दुख भरा हुआ था।

कमला चुप बैठी एक टक लगाये अन्धे को देख रही थी।

"आप क्या सीखियेगा ?" फिर उस ने पूछा ।

वायलिन बाजा उठा कर उसने एक तरफ़ रख दिया था उसे फिर उठाना चाहा परन्तु पा न सका । कमला ने जल्दी से उठा कर उसे पकड़ा दिया । अन्धे ने कुछ भी नहीं कहा । सिर्फ उसके मुख पर एक चमक सी आगई जिससे यह साफ़ प्रकट होता था कि वह अपने हृदय में इस उपकार का धन्यवाद दे रहा है । कमला ने भी देखा । यह कैसा नया रंग था । क्या अन्धा होते हुए भी वह अपने भाव बिना आंखों के प्रगट कर सकता है ?

वायलिन बजा। उसकी उंगलियां तारों पर चलकर एक दुःख भरा अलाप निकालने लगीं । कितना दुःख भरा अलाप था । राग खत्म कर मास्टर जी ने वायलिन कमला की तरफ़ बढ़ाते हुए कहा "बजाइये ।"

"मुझे नहीं आता ।"

"अच्छा देखिये ।" उस ने हाथ इधर-उधर हिला कर कमला को वायलिन पकड़ने का तरीका बताया । बड़ी देर तक कमला सीखती रही । क्या सीखी ? अन्धा नहीं जानता था । वह उसका हाथ पकड़े ठण्डी तारों पर घुमाता रहा । वह उन मुर्झाये हुए हाथों को देख कर रोती रही । एक दो बूंदें उसके हाथों पर भी गिर पड़ीं । वह चौंक पड़ा ।

सिखाई खत्म हो गई । कमला ने एक गाना सुनाने का आग्रह किया । मास्टर जी ने गाना गाया । गाया एक दुःख भरा गाना । कमला रोती रही ।

"और गाऊं" उस ने पूछा ।

"नहीं" जल्दी से कमला बोल उठी ।

दोनों चुप थे ।

"आप को दुःख है ?" कमला ने पूछा ।

वह चुप था ।

"आप दुःख के राग क्यों गाते हैं ?" फिर कमला ने पूछा ।

कुछ देर दोनों चुप रहे ।

"आप को भी दुःख है ?" अन्धे ने पूछा ।

कमला चुप थी ।

"आप क्यों रोती हैं ?" फिर उस ने पूछा ।

दोनों चुप थे ।

"आप का दुख भरा राग सुन कर मुझे रोना आ गया आप के राग दुख प्रगट करते हैं । आप क्यों दुःख भरे गीत गाते हैं ?"

"दुःख भरा राग गाने से मेरा दिल हलका हो जाता है ।"

"आप बहुत दुःखी हैं ?"

"हां और नहीं । अच्छी बात तो यही है कि दुख को अपने हृदय में रख लिया जाय और दूसरों पर प्रकट न होने दिया जाय ।"

"क्या आप को अन्धे होने का दुःख है ?" कमला ने पूछा ।

"नहीं ! नहीं ! जन्म के अन्धे को अन्धे होने का दुःख नहीं होता।"

कमला के पैरों के तले से धरती निकल गई । उसकी आशाओं पर पानी फिर गया । उसने आश्चर्य से पूछा "जन्म से ।"

"हां—हां । पहिले मेरे भी आंखें थीं । तब आखें होते हुए भी मैं अन्धा था । अब आंखें नहीं हैं । फ़र्क सिर्फ़ इतना ही है ।"

"आप पहिले अन्धे नहीं थे ।"

"शक्ल में नहीं अक्ल में था ।" हंसते हुए अन्धे ने कहा । "अब इस अंधेरे में मुझे एक नया ही संसार दिखाई देता है । इस अंधकार में इस दुनिया की सब बुरी २ बातें छिप गई हैं । अब मैं अपने मन में अच्छी ही बातों को देख सकता हूं । वे हर समय मेरी आंखों के सामने नाचती रहती हैं ।

उनकी सुन्दरता बढ़ती रहती है जिसे कोई नष्ट नहीं कर सकता। जब मेरी आंखें थीं दुनिया के सब अनर्थ देख सकता था। मुझे उनसे घृणा थी। मेरे इस अंधकारमय संसार में सब बराबर हैं। सब सुखी हैं।"

"इसमें कोई दुःखी नहीं।"

"नहीं।"

पुनर्जन्म

कमला अन्धे का हाथ पकड़ कर उसे बाग़ में ले गई और बैंञ्च पर बिठा दिया। उसने गाना गाया वही दुःख भरा गाना।

गाना खत्म हो गया। कमला मास्टर जी के पास बैठी एक टक उसकी ओर देखती रही। "आप कौन हैं?" उसने धीरे से पूछा।

"यह मैं नहीं जानता।" हंसते हुए वह बोला। "कोई नहीं जानता। मैं दुनिया की नजरों में मर चुका हूं।"

"क्या?" आश्चर्य से कमला ने पूछा।

"कुछ नहीं। जब मेरी आंखें थीं मैं दुनिया के लोगों को देख सकता था। मन में उनका दुःख देख उसे दूर करने की अभिलाषा होती थी। मैं रात भर जागा करता था। अब सोचा करता हूं। वे कितने अनमोल

दिन थे। अब मैं उन्हें पा नहीं सकता। उन्हें देख नहीं सकता। उनका दुःख दूर नहीं कर सकता। वे उसी तरह पड़े रहेंगे। फिर मेरे दिल में आशा उठती है कि मेरा काम पूरा करने के लिये अन्य कोई अवश्य ही संसार में पैदा होगा। कार्य की ज्योति कभी बुझा नहीं करती। जब तक लकड़ी में आग नहीं लगती तब तक वह गर्मी नहीं पहुंचा सकती। परन्तु जब उसे एक बार आग पकड़ लेती है तो धीरे २ भीषण ज्वाला बन बहुत सी ऐसी चीज़ों को भी जो जलना नहीं चाहतीं वह जला कर खाक कर देती है। सत्य की यह आग जल चुकी है। परन्तु मैं उसकी बढ़ती हुई ज्वाला को देख नहीं सकता।"

"ज्वाला को आप देख नहीं सकते परन्तु आपका हृदय अवश्य ही उस ज्वाला की गर्मी को अनुभव कर सकता है।"

"अक्सर बच्चे आग से खेलना पसन्द करते हैं और उसे वे पकड़ने की कोशिश करते हैं परन्तु वे नहीं जानते कि आग में हाथ डालने से हाथ जल जाएगा। इसी प्रकार मैं उस कार्य से अधिक प्रेम करता था और उस अग्नि की लपट का अनुभव करना चाहता था परन्तु ऐसा कर सकने के पहिले ही मेरी आखें अन्धी हो गईं और मेरी हार्दिक आकांक्षा जी की जी में ही रह गई। अब इन अधूरी आशाओं की ज्वाला में मेरी आत्मा जली जा रही है। एक वह दिन था जब मेरे हृदय में प्रेम की अभिलाषाए थीं परन्तु मैंने उन्हें कुचल दिया। मैंने प्रेम के आवेश में जो अत्याचार किये उनका ठीक बदला अब मुझे मिल रहा है। उस वक्त मेरे दिल में प्रेम था, दिन २ मेरा प्रेम बढ़ता जा रहा था। मेरा हृदय हर समय मुझे सावधान करता कि मैं ग़लत रास्ते पर चल रहा हूं परन्तु मैं आंखें बन्द किये चलता गया। जब मेरी आंखें खुलीं मैं एक चौराहे पर खड़ा था। चौराहे के सब रास्ते मुझे अपनी ओर संकेत कर बुला रहे थे। मैंने सुख और प्रेम का सीधा रास्ता छोड़ कर उस रास्ते की तरफ़ क़दम बढ़ाया जिस पर बड़े २ अक्षरों में लिखा हुआ था "यह कठिन रास्ता है।" मैंने जोश के आवेश में कुछ नहीं

सोचा, उसी तरफ़ चल पड़ा। सामने आने वाली कठिनाइयां दूर करने की धुन में मैं सुख और प्रेम सब भूल गया। मैं इन कठिनाइयों को दूर करने में एक नया ही आनन्द पाने लगा। अब मेरे सुख की दुनिया में बहुत सी प्रेमिकायें आ गईं। पहले मैं एक को ही प्रेम करता था —"

"वह कौन थी ?" रोते हुए कमला ने पूछा।

"वह कौन थी मैं नहीं जानता। उस पवित्र देवी की तस्वीर मेरे हृदय में खिची हुई है।"

"आपने उसे छोड़ा क्यों ?"

"मुझे उससे प्रेम था। परन्तु मुझे वह प्रेम उसकी सुन्दरता से था। जिसने मुझे उसका ग़ुलाम बना दिया था। जब वह सुन्दरता नष्ट हो जाती शायद मेरा प्रेम भी नष्ट हो जाता। परन्तु अब वह मेरे हृदय की देवी हमेशा उसी तरह बनी रहेगी। उसकी सुन्दरता नष्ट हो सकती है। मैं न मिटने वाली उस सुन्दर देवी से प्रेम कर हमेशा प्रसन्न रहूंगा। वह भी हमेशा मुझे उसी नजर से प्रेम करती रहेगी।"

"क्या वह भी आप से प्रेम करती थी ?"

"हां बहुत।" धीरे से मास्टर जी ने कहा।

"उसे बहुत दुःख हुआ होगा।"

"शायद। परन्तु मैंने जो किया ठीक था। मैं अपने कर्तव्य पर प्रेम की आहुति चढ़ा सकता था। मैं हजारों की आहें सुनकर अपने प्रेम और सुख को ठुकरा सकता था। मैंने जो किया ठीक था।"

"ठीक था।" कमला ने गुस्से से कहा। "ठीक था। एक तरफ आपका कर्तव्य था और दूसरी तरफ एक अबला का प्रेम। तुमने अपने कर्तव्य की धुन में उसका प्रेम ठुकरा दिया। उसका जीवन नष्ट करते तुम्हें दया नहीं

आई । तुम दुष्ट हो दुष्ट । तुमने मेरे प्रेम की कुछ भी क़दर नहीं की । तुम उसे ठुकरा कर चले गये । तुम—तुम—।" कमला का गला भर आया । वह बोल न सकी । आंखें मूंद जोर २ से रोने लगी ।

"कमला"

"संतोष"

ज्वाला-मुखी

बहुत दिन बीत गये। कमला ने संतोष से बहुत कम बात कीं। सिर्फ़ गाना सीखने जाती। आज बड़ा सुहावना दिन था। संतोष का हाथ पकड़ बाग में ले गई। एक बॅञ्च पर बिठा वह एक तरफ़ चली गई। संतोष बॅञ्च पर बैठे बड़ी देर तक सोचते रहे कि उन्हें क्या करना चाहिए।

कमला के कारण उन्हें आंखों की कमी बिल्कुल अनुभव नहीं होती थी और वे एक नई ही दुनिया में घूम रहे थे जिसका सुख और दु:ख वे अनुभव कर सकते थे परन्तु देख नहीं सकते थे।

मेरे विषय में कमला के क्या विचार होंगे। वह मुझे भूली नहीं। उन्होंने पिछले दिनों की सब बातें याद कीं और उन्हें निश्चय हो गया कि कमला की शादी हो गई है। आज कल ससुराल में है। परन्तु यह उनके समझ में न आया कि कमला दुखी क्यों है ?

किसी ने बाग़ में कुछ दूर गाना शुरू किया।

कमला का गाना सुन संतोष चौंक पड़े। वह उसने आख़िरी दिन गाया था। आज उसमें बहुत ही दुःख भरा था। संतोष की आंखों के आंसू नहीं रुक सके वे रो उठे और लकड़ी टेकते हुए उधर गये जिधर से गाने की आवाज़ आ रही थी। कमला आहट पाकर चुप हो गई।

"कमला" धीरे से संतोष ने कहा :

कमला चुप घास पर मुंह औंधा कर रो रही थी।

"रानी बि——।"

"नहीं संतोष ! मुझको रानी बिटिया कह कर मत चिढ़ाओ।"

"क्यों ?"

"मैं आपके मुंह से कमला का नाम सुनना चाहती हूं। उससे मेरे हृदय को बहुत सुख मिलता है।"

"यह ठीक नहीं है। मेरा ख्याल था कि शादी के बाद तुम पुरानी बातें भूल गई होगी।"

"परन्तु मेरी शादी नहीं हुई।" रोते हुए कमला ने कहा।

आश्चर्य से संतोष ने पूछा "शादी नहीं हुई ?"

"तुम मुझे नहीं समझ सके। दुनिया मुझे न समझ सकी। औरों का क्या कहना मेरे पिता ही मुझे नहीं समझ सके। आपकी मृत्यु के समाचार पाने के बाद मेरे पिता ने मुझसे बहुत आग्रह किया। मेरे प्रण और प्रेम की उन्होंने परवाह नहीं की। उनका आग्रह और दुख देख मैंने हां कर दी। उनके प्रेम और आग्रह के कारण मुझे राजी होना पड़ा परन्तु मैंने यह प्रण कर लिया की जीवन रहते मैं हृदय से किसी और से प्रेम न करूंगी।"

"क्यों ?"

"मैं अपना हृदय आपको दे चुकी थी। अपना शरीर मैंने अपने पिता के आग्रह पर न्योछावर कर दिया। मेरी शादी हो गई। विधाता ने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली और मैं पहिली ही रात विधवा हो गई और मेरा जीवन नष्ट होने से बच गया।"

"विधवा ?"

"हां ! दुनियां जानती है कि मेरी शादी हो गई और मैं विधवा हूं। परन्तु मेरी शादी नहीं हुई। मैं विधवा नहीं हूं।"

"कैसे ?"

"मेरे हृदय के पति अभी जीवित हैं।"

"कमला ! ऐसे शब्द अपनी जुबान से निकाल कर मेरे हृदय की खिची हुई सुन्दर मूर्ति को नष्ट मत करो।"

"मैं उसे नष्ट नहीं कर रही हूं। दुःख और समय की मूसलाधार वर्षा से उस पर काई चढ़ गई थी। अपने प्रेम से मैं उसे फिर से नया कर रही हूं।"

"प्रेम !" घृणा से संतोष ने पूछा।

"हां संतोष, मैं तुम से प्रेम करती हूं।"

"मैं तुम से घृणा करता हूं। तुम विधवा हो। तुम्हें ईश्वर से प्रेम करना चाहिये, मनुष्य से नहीं।"

"मेरे ईश्वर आप हैं।" रोते हुए कमला ने कहा। संतोष एक ओर को चल दिये। कमला ने पैर पकड़ उन्हें रोक लिया। वे खड़े हो गये।

"क्या आप मुझे भूल गये। क्या आप मुझ से प्रेम नहीं करते ? मैंने क्या २ दुःख झेले, क्या आप नहीं जानते? मेरा हृदय कहता है कि आप जरूर मुझ से प्रेम करते हैं। बताइये ! बताइये आप मुझ से प्रेम करते हैं

कि नहीं !! तुम चुप खड़े हो। क्या तुम मेरा दुःख अनुभव नहीं कर सकते। बोलो ! संतोष बोलो !!"

"कमला ! यह तुम्हें क्या हो गया है ? पागल मत बनो।"

"मैं पागल हूं पागल ! प्रेम में सब पागल हो जाते हैं। दुःख की ज्वाला से धधक कर प्रेमी का हृदय ज्वालामुखी पहाड़ की न्याईं फट जाता है और लावे की ही तरह वह भी अपने भावों को रोक नहीं सकता।"

"कमला यह लावा सब वस्तुओं को जला कर खाक कर देता है। धरती हिल जाती है। सब मनुष्य परमात्मा को कोसते हैं और जब ज्वालामुखी शान्त हो जाता है तो उसमें सिवा अंधकार के और कुछ नजर नहीं आता।"

कमला रो रही थी।

"कमला तुम मुझ भूल जाओ। जिस तरह मैं दुनिया की नजरों म मर चुका हूं उसी तरह——"

मास्टर जी रो रहे थे।

"नहीं ! संतोष नहीं !! मेरी जिन्दगी बर्बाद मत करो। मेरी उभरती हुई आशाएं फिर मत कुचलो। मैंने इस दुनिया में कुछ सुख नहीं देखा। मेरे दिल में अभिलाषाएं हैं प्रेम है संतोष।

"मैंने तुम्हारे सिवा किसी और से प्रेम नहीं किया। फिर तुम्हें मैं कैसे भूल जाऊं ? यह मुझ से नहीं ——।"

"रानी बिटिया" राजा साहब ने अन्दर से आवाज दी।

स्वप्न

रात बहुत बीत चुकी थी। कमला पलंग पर पड़ी रो रही थी। इतने में एक आहट सुन कर चौंक पड़ी। उसे कुछ शक़ हुआ और वह सन्तोष के कमरे की तरफ गई। सन्तोष बाहर जाने का प्रयत्न कर रहे थे परन्तु दर्वाज़ा बन्द था। कमला दर्वाजा खोल कर अन्दर गई और अन्दर से चटख़नी लगा दी।

सन्तोष "कौन ?"

"आप जा रहे हैं ?"

"हां।"

"कहां ?"

"जहां पेट ले जाएगा।"

"नहीं सन्तोष तुम नहीं जाओगे ।"

"कमला मेरा यहां ठहरना ठीक नहीं ।"

"क्यों ?"

"मेरे कारण तुम अपना कर्तव्य भूल रही हो । मैं भारत की नारियों के ऊंचे आदर्श को मिट्टी में मिलाना नहीं चाहता । तुम विधवा हो । पति हीन हो और जिस तरह भारत की हजारों नारियां भारत का नाम उज्जवल करने के लिए बिना हूं-हां किये अपने जीवन का बलिदान दे देती हैं उसी भांति ईश्वर प्रेम में लीन होकर तुम्हें भी आदर्श प्राप्त करना चाहिये ।"

"स्त्री के लिए पति ही ईश्वर है । पति ही देवता है और आप मेरे पति हैं ।"

"नहीं" जोर से सन्तोष ने कहा ।

"मैं जिसे अपना हृदय दे चुकी हूं वही मेरा पति है । दुनिया के अत्याचारों ने मुझे इस जाल में फंसा दिया परन्तु मैं अपने प्रणों को नहीं भूल सकती, आप मेरे देवता हैं ।"

"कमला तुम्हारे मन में ऐसी कामनाएं हैं जो तुम्हें नर्क की ओर खींच रही हैं ।"

"हां सन्तोष मेरे मन में कामनाएं हैं, आशाएं हैं । इतनी अभिलाषाएं हैं जो अभी तक पूरी नहीं हुईं। मैंने कभी किसी को नहीं सताया। तो मुझे यह दुःख क्यों भोगना पड़ रहा है ? मैं नहीं सह सकती। उल्टे-पुल्टे रिवाजों को क़ायम रखने के वास्ते मैं अपनी इच्छाओं को मिट्टी में न मिलने दूंगी ।"

"कमला"

"मैंने दुनिया में कुछ सुख नहीं देखा । क्या मेरा हृदय प्रेम से भरा हुआ नहीं ? क्या उसमें उमंगें नहीं ? क्या मेरा हृदय सुख देखना नहीं चाहता ? अच्छी २ चीजें देख कर क्या मुझे खुशी नहीं होती ? बताओ मैंने दुनिया में क्या देखा है ? बताओ मैंने क्या पाप किये हैं ? जो सब कहते हैं कि मैं दुनिया

को त्याग दूं । तुम क्यों कहते हो कि मैं तुम्हें भूल जाऊं ? बोलो सन्तोष ! बोलो ।"

"कमला"

"नहीं सन्तोष नहीं । अब यह हरगिज नहीं होगा । दुनिया कहती है कहने दो । वह मझे नीच कहती है कहती रहे । मेरे मन की कामनाओं को अब तुम्हें ही पूरी करना होगा । मैं तुम्हें कभी न जाने दूंगी। मैं तुम्हारे लिये अंधे की लाठी बनूंगी और तुम्हारे सुख का कारण । अब जिधर तुम्हें मैं ले जाऊंगी तुम्हें चलना पड़ेगा । हम सुख से रहेंगे । अगर इस सुख की दुनिया को पाप कहते हैं तो मैं उसकी परवाह नहीं करती । मैंने बहुत दुःख भोगे हैं और अब ज्यादा दुःख में नहीं भोग सकती। अगर मेरे कारण भारत के नाम पर धब्बा लगता है तो यह मेरी ग़लती नहीं है । यह उनकी मूर्खता का कारण है । जो मेरे हृदय को समझना नहीं चाहते थे ।"

"कमला ! कमला !!"

"सन्तोष बहुत हो चुका । अब मुझसे नहीं सहा जाता । मेरा हृदय अब नहीं मानता । मैं तुम्हारे लिये पैदा हुई थी और तुम मेरे लिये । अब हम हमेशा इकट्ठे रहेंगे । दुनिया हम पर हंसती है हंसने दो । जब तक तुम मेरे पास रहोगे मुझे और किसी के सहारे की जरूरत नहीं ।"

"कमला"

"हां सन्तोष सत्य है । मैं तुम से बहुत प्रेम करती हूं । अगर तुम अब मुझे छोड़ कर चले जाओगे तो मैं अवश्य मर जाऊंगी । क्या तुम्हें यह जान कर कि तुम्हारी कमला मर गई कुछ दुख नहीं होगा । नहीं सन्तोष नहीं । तुम इतने निर्दयी नहीं हो । बोलो क्या तुम मुझ से प्रेम नहीं करते ?"

"कमला मैं तुम से बहुत प्रेम करता हूं ।"

कमला फर्श पर बैठ गई और सन्तोष की जांघों में सिर रख कर रोने लगी ।

"तुम अब कभी नहीं जाओगे ।"

सन्तोष रो रहे थे ।

"बोलो सन्तोष बोलो । मेरे हृदय की जलती हुई ज्वाला अपने प्रेम भरे शब्दों से जरा शान्त कर दो। कुछ दिन दुःख देखने के बाद शकुन्तला को अपने पति मिल गए थे । क्या मुझसे वर्षों के बाद मिले सन्तोष प्रेम की बातें न करेंगे ।"

कमला ने सन्तोष के हाथ पकड़ लिये । उन्होंने कमला को उठा कर हृदय से लगा लिया । कमला उनके गले पर सिर रक्खे रो रही थी ।

वे दोनों रो रहे थे । वे खुशी के आंसू थे ।

"कमला" गुस्से से राजा साहब ने आवाज दी ।

स्वप्न टूट गया ।

वि

दा

ई

सन्तोष रात ही चले गये । कहां? किसी को पता नहीं । कमला पलंग पर पड़ी रो रही थी । राजा साहब के आने की आहट सुन कर उसने अपना मुंह छिपा लिया । शर्म में वह डूबी जा रही थी । राजाजी आकर पास खड़े हो गये ।

"कमला" धीरे से राजा साहब ने कहा । "मैं तुम्हें बहुत नेक समझता था ।"

कमला रो रही थी ।

उन्होंने कुछ कहना चाहा लेकिन फिर रुक गये । वे अपनी रानी बिटिया को बहुत प्यार करने लग गये थे । और इस प्रेम ने उन्हें कठिन शब्द कहने से रोक दिया । शायद बालिका के हृदय में बहुत चोट लग जाय ।

"तुम अपने पिता के यहां चली जाओ" यह कह वे पीछे की ओर लौट लिये ।

"नहीं मैं नहीं जाऊंगी" रोते हुए कमला ने कहा ।

राजा साहब की सोई हुई धारणा जाग उठी । उन्होंने गुस्से से कहा "तुम्हें अपने घर में रख कर अपनी लुटिया डुबाना नहीं चाहता । अभी तक मैं तुम्हें सती साध्वी समझता था । तुम्हें नेक और पाक जानता था परन्तु आज पता लग गया कि तुम पापिन हो ।"

"नहीं"

"अपनी आंखों देखी बात को मैं कैसे झूठ मान सकता हूं । पराये पुरुष से प्रेम करना विधवा का धर्म नहीं । तू पापिन है पापिन ।"

"मैं पापिन नहीं हूं" कमला उठ कर पलंग पर बैठ गई उसके बाल बिखरे हुए थे । आखों से घृणा और क्रोध की चिनगारियां निकल रहीं थीं । उसने घायल सिंहनी की भांति कहा "सुन लो अच्छी तरह से सुन लो और अगर जी चाहे तो सारी दुनिया को सुना दो । मैं सन्तोष से प्रेम करती हूं और मरते दम तक प्रेम करती रहूंगी । मैं शादी से पहिले उनसे प्रेम करती थी । वे अछूत थे इसलिये मेरे पिता ने मेरी शादी उनसे नहीं की और तुम्हारी वहू बना दिया । पहिली ही रात में विधवा हो गई तब तुमने कुछ नहीं कहा । वह मर गये अपने पाप कर्म के कारण । परन्तु मैं उनके कार्यों का दु:ख क्यों भोगूं? मैं विधवा हूं परन्तु मेरे हृदय में सच्चा प्रेम है । मैंने सिवा सन्तोष के और किसी से प्रेम नहीं किया । मैं पापिन नहीं हूं । दुनिया पापी है, तुम पापी हो ।"

राजा साहब चुप खड़े सब सुन रहे थे ।

"मैं जाऊंगी और अवश्य जाऊंगी लेकिन पिता के यहां नहीं । मैं वहां जाऊंगी जहां मेरा प्रियतम है । अब आप मुझे व्यर्थ रोकने की कोशिश न करें ।"

राजा साहब चले गये। बाहर निकल कर उन्होंने रूमाल से आँसू पोंछ लिये।

रात हो गई। कमला ने दो एक कपड़े लपेटे और बिना आहट किये हमेशा के लिये ससुराल से बिदा हो गई।

सत

सङ्ग

कमला ऋषीकेश चली गई। यहां श्री गङ्गा जी के तट के समीप एक आश्रम था। वहां बहुत सी सत्संगी औरतें रहा करती थीं। वह भी उन त्यागिनियों में मिल गई।

उस मठ के कर्ताधर्ता एक बड़े तपस्वी थे। कमला उनके पास गई और प्रणाम कर उनसे मठ में शामिल होने की आज्ञा मांगी। वह युवती थी, सुन्दर थी उसके चेहरे पर बचपन के चिह्न दिखाई देते थे। परन्तु दुःख ने उन पर भी अपना प्रभाव जमा रक्खा था।

स्वामी जी ने आशीर्वाद देते हुए उसे अपने पास बिठा लिया और स्नेह से पूछा। "बेटा तुम्हारे माता-पिता कोई नहीं हैं।"

"हैं! मेरे पिता जीवित हैं।"

"तो फिर तुम उनके पास क्यों नहीं जातीं?"

"मैंने यह प्रण कर लिया है कि ईश्वर भक्ति में अपना शेष जीवन बिता दूंगी ।"

"परन्तु बेटा तुम ईश्वर भक्ति घर में भी कर सकती हो । स्त्री का धर्म है कि वह घर में ही अपना जीवन बिताए । घर का कार्य ही उसके लिए काफ़ी है ।"

"नहीं स्वामी जी मैं घर नहीं जाऊंगी । मैं अब आप के आश्रम में रह कर जीवन व्यतीत कर दूंगी । मैंने घर न जाने की प्रतिज्ञा कर ली है ।"

"क्यों बेटा अपने घर से तुझे इतनी चिढ़ क्यों है ?"

"चिढ़ नहीं । दुःख होता है । मुझे वहां जाते शर्म आती है । कुछ दिन पहिले मैं वहां प्रेम से नाचती गाती थी। अब मैं वहां जा कर दुःख के दिन नहीं काट सकती ।"

"तुम्हें दुःख क्या है ?"

"मैं विधवा हूं ।"

स्वामी जी कुछ देर सोचते रहे फिर उन्होंने कहा "तुम्हें मैं अपने आश्रम में रख लूंगा परन्तु यहां के सब नियम तुम्हें मानने पड़ेंगे ।"

कमला ने सिर झुका लिया ।

"इस मठ का पहिला नियम है ईश्वर भक्ति, हम सब ईश्वर की पूजा करते हैं । दुनिया के सब पुरुषों को तुम्हें अपना भाई समझना होगा और सब स्त्रियों को बहिनें । जिस किसी को इस दुनिया से प्रेम है वह हमारे संघ में नहीं रह सकता । तुम्हें यह नियम स्वीकार है ?"

कमला ने सिर हिला दिया ।

"तुम्हें यह जीवन शुरु-शुरु बहुत कठिन मालूम होगा । यहां मोटी सूखी रोटी सिर्फ एक बार मिलती है वह भी यदि आए हुए यात्रियों के खिलाने से बच जाय तब । उपवास तो अक्सर ही करना पड़ता है । तुम

अच्छी तरह सोच लो कि यहां सिवा दुःख के कोई सुख की आशा नहीं। जो सुख भोगना चाहते हैं वे यहां नहीं रह सकते।"

कमला सिर झुकाए सब सुनती रही।

"हमारे मठ में बहुत सी देवियां हैं जिन्होंने संसार की विषय वासनाएं हमेशा के लिए त्याग दी हैं। तुम्हें भी वैसा ही जीवन व्यतीत करना होगा। तुम्हारे किसी कार्य से हमारे मठ को कोई हानि नहीं होनी चाहिये। जाओ माता जी से कह दो।"

कमला प्रणाम कर चली गई। माता जी ने उसे उसकी कोठरी दिखा दी। वहां एक चटाई पड़ी थी। एक लुटिया और एक टूटी हुई थाली रखी थी। कमला ने सफ़ेद साड़ी उतार गेरुए वस्त्र धारण कर लिए।

दु

खि

या

बहुत दिन बीत गये, कमला रोज सूर्य उदय होने से पहिले उठती और ईश्वर प्रार्थना कर यात्रियों के लिए खाना बनाती। इस कार्य में वह अपने सब पुराने ख्यालात भूल गई। प्रार्थना के समय वह हमेशा ईश्वर से सन्तोष के सुखी रहने के लिए प्रार्थना करती।

थाली परोस कर पंगत को देने गई। कुछ यात्री हरिद्वार से आए हुए थे। नई खबरें सुना रहे थे।

एक ने कहा—"देखो दुनिया में कितना पाप फैल रहा है?"

दूसरा यात्री—"कहो भाई उनका क्या हाल है?"

पहिला यात्री—"भैय्या आज उपवास का बीसवां दिन है।"

तीसरा यात्री—"मालूम भी हो कि वे उपवास क्यों कर रहे हैं ?"

पहिला यात्री—"कहते हैं पार्वती जी के मन्दिर में आएंगे ।"

चौथा यात्री—"वो भाई जाने क्यों नहीं देते ?"

पहिला यात्री—"वाह भाई खूब कही । कभी नीच भी वहां जा सकते हैं ?"

कमला सुन रही थी । पत्थर की मूर्ति की न्याईं वह वहीं खड़ी रह गई । अनेक प्रकार के विचार उसके दिमाग में घूम रहे थे ।

पांचवा यात्री—"वह हैं कौन ?"

पहिला यात्री—"मैं नहीं जानता ।"

दूसरा यात्री—"अब उनका क्या हाल है ।"

पहिला यात्री—"मुश्किल से एक दो दिन जिएंगे ।"

कमला के हाथ से थाली गिर पड़ी ।

रात पड़ चुकी थी । मठ की सारी त्यागनियें सो गईं । सिर्फ कमला को नींद नहीं आ रही थी । वह उठी धीरे २ क़दम दबा कर बाहर निकल गई । थोड़ी ही दूर पर एक बाड़ा था । उसी में यात्री ठहरे हुए थे । कमला ने धीरे से टट्टर खोला और अन्दर चली गई । सब यात्री जल पान करके सो गये थे । वह सवेरे वाले बुड्ढे यात्री की खोज करने लगी परन्तु वह कहीं दिखाई नहीं दिया । उसने फिर ढूंढा । निराशा उसे सता रही थी । हर पल उसके लिये एक कल्प के समान था । वह पतली धोती पहिने सर्दी में कांप रही थी ।

कुछ आदमी मुंह ढांपे एक ओर सो रहे थे । वह सोचने लगी कि किसे जगाऊं । शायद कोई और निकल पड़े तो मैं क्या कहूंगी । तो क्या मैं

छोड़ दूं और सब भूल जाऊं। नहीं मैं उनसे आखिरी बार ज़रूर मिलूंगी।

हिम्मत कर वह आगे बढ़ी और एक आदमी को जो जोर २ से खुर्राटे ले रहा था धीरे से हिलाया। बड़ी देर बाद उसने आखें खोलीं और कमला को देख कर हक्का बक्का रह गया।

कमला ने इशारे से उसे बोलने से मना कर दिया और उसका हाथ पकड़ कर वह बाहर ले गई।

"आप हरिद्वार से आए हैं ?" धीरे २ कमला ने पूछा।

"हां"

"वह कौन हैं ?"

"वह कौन ?"

"जो पार्वती जी के मन्दिर पर धरना दिये बैठे हैं।"

"मैं नहीं जानता"

"क्या वे अन्धे हैं ?"

"हां"

कमला आखों पर हाथ रख जोर २ से रोने लगी।

"वह तुम्हारे कौन हैं ?" दिलासा देते हुए बुड्ढे ने पूछा।

कमला चुप रही।

"क्या तुम उन्हें जानती हो ?"

"हां" रोते हुए कमला ने कहा। बुड्ढे का दिल भी कमला की यह हालत देख कर पसीज गया।

"उनका क्या हाल है ?"

"कई दिन हुए उन्होंने भूख हड़ताल शुरू की थी । ब्राह्मणों ने दर्वाजा खोलने से इन्कार कर दिया ।"

"तुमने उन्हें कब देखा था ?"

"दो दिन हुए ।"

"क्या हाल था ?"

"बहुत बुरा"

"क्या वे अभी जीवित होंगे ?"

"शायद"

"मुझे उनके पास ले चलो ।"

"परन्तु यह कैसे हो सकता है ।"

"क्यों नहीं ! क्या तुम्हें मेरी दशा देख कर दया नहीं आती ? वे मेरे——।"

"वह तुम्हारे——।"

"मैंने इस संसार में उनके सिवा किसी और से प्रेम नहीं किया । वे मेरे देवता हैं । वे ही मेरे ईश्वर हैं । वह अपनी कमला को अकेला छोड़ कर हमेशा के लिये जा रहे हैं । क्या तुम्हें एक अनाथ अबला पर दया नहीं आती । चलो ईश्वर के लिए मुझे उनके पास ले चलो ।"

"अच्छा सवेरे——।"

"नहीं मैं यहां एक घड़ी भी अब नहीं ठहर सकती । मैं हाथ जोड़ती हूं मुझे उनके पास तुरन्त ले चलो । मैं उनसे अन्तिम बार मिलना चाहती हूं । मेरा हृदय कह रहा है कि उन्हें मुझ से मिलने की पूरी आशा है । मुझे जल्दी ले चलो । कहीं वे मेरे जाने से पहिले——।"

"परन्तु स्वामी जी"

"वे यह जान कर अवश्य नाराज होंगे । परन्तु मेरा कर्त्तव्य क्या है मैं अच्छी तरह जानती हूं । ईश्वर के लिए मुझे जल्दी ले चलो । मेरे पास इस संसार में कुछ नहीं है जिससे मैं तुम्हारे इस उपकार का बदला दे सकूं । सिर्फ़ मेरे हृदय में एक दुखिया की प्रार्थना होगी और उसमें मैं हमेशा तुम्हें धन्यवाद देती रहूंगी । हर एक घड़ी मेरे लिए एक दिन बन रही है । मैं रास्ता नहीं जानती नहीं तो अकेली ही चली जाती । ईश्वर के लिये चलो ।"

दोनों चल दिये उस अंधेरी रात में ।

मूर्ति

बहुत सी चिनगारियां उठीं और बढ़ कर भीषण ज्वाला बन गईं। उस ज्वाला में वह चिनगारियां जिनसे आग लगी थी छिप गईं।

संतोष लाठी टेकते कई गांवों में गये। कोई उन्हें जानता न था। कोई उन्हें पहचानता न था। परन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। अपना कर्तव्य पालन करने के लिये वे दृढ़ संकल्प कर कोशिश करते रहे। किसी गांव में तो कोई दया कर उन्हें कुछ खाने पीने को दे देता। कई गांवों से ब्राह्मणों ने धक्के दे कर निकाल दिया था।

घूम फिर कर वे कुछ दिन बाद हरिद्वार पहुंचे। उन्हें ऐसा मालूम होने लगा कि उनके आखिरी दिन पास आ गये हैं। दुख और दर्द के मारे उनके पैर नहीं उठते थे। एक रात वे पार्वती जी के मन्दिर की सीढ़ी से टकरा कर गिर पड़े और फिर वहीं पड़े रहे। ब्राह्मणों ने हजार कोशिश की

पर वे न माने । किसी ने सूखी मोटी रोटी दे दी तो वह खाली । किसी ने पानी दे दिया तो पी लिया नहीं तो भूखे प्यासे वे वहीं पड़े दुःख के गीत गाते रहते । लड़कों ने यह जान कर कि पागल है खूब पत्थर मारे । दो दिन से उनकी हालत बहुत खराब हो गई थी । न बोलते, न हिलते, न भजन गाते । रात को बड़ी मूसलाधार बारिश हुई। उन्हें कुछ होश आया । धीरे २ गुनगुनाया । "भजो मन हरि नाम" और फिर चुप होकर लेट गये ।

कोई आया, दौड़ता हुआ आया, और दौड़ कर उनको गले से लगा लिया ।

"क–म–ला"

वह बोली नहीं । छाती पर सिर रख वह रो रही थी ।

"मैं जानता था कि तुम एक बार अवश्य आओगी । कमला तुम देवी हो । रोओ मत ! रोने से कुछ नहीं होगा । एक दिन हम सब को इस संसार से जाना है ।"

कमला रो रही थी ।

"तुम्हें आज प्राप्त कर मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कमला जैसे मैंने देवी के दर्शन कर लिये । कमला तुम ईश्वर भक्ति में हृदय लगाना और मुझे याद भी मत करना । मैं यहां पर ही मर जाऊंगा । ये मेरी लाश गङ्गा में फेंक देंगे । दुनिया मुझे भूल जाएगी । तुम भी मुझे भूल जाना ।"

"संतोष उठो मैं तुम्हें ले जाऊंगी ।"

"कहां ?"

"जहां तुम कहोगे ।"

"नहीं, कमला नहीं । अब मैं और कहीं नहीं जाऊंगा । तुम जाओ । मेरा हृदय बहुत शान्त है । (देखने वालों ने बहुत से पत्थर फेंके) इन सब से कह दो पत्थर———!"

कमला उठी। पागलों की न्याईं चिल्ला चिल्ला कर कहने लगी। "पापियो! तुम्हें दया नहीं आती। मरते हुए को मारते तुम्हें लज्जा नहीं आती। तुम दुष्ट हो, पापी हो, तुम सब नर्क में जाओगे।"

सब हंस दिये।

कमला ने पास पड़े पत्थर उठा उठा मारना शुरू कर दिया। भीड़ कुछ पीछे हट गई।

उठाने की कोशिश करते हुए कमला ने कहा "चलो संतोष चलें"

"कहां? कमला कहां?"

"जहां तुम कहोगे, संतोष।"

"अच्छा मुझे मूर्ति के दर्शन कराने के लिये मन्दिर में ले चलो।"

कमला ने संतोष को उठाना चाहा परन्तु उठा न सकी।

"कमला व्यर्थ है! रहने दो!!"

कमला दौड़ती हुई मन्दिर की सीढ़ियों पर चढ़ गई।

"क—म—ला"

किसी ने संतोष की तरफ एक पत्थर फेंका। एक आह निकली।

कमला मूर्ति उठा कर दौड़ी।

मर गया! मर गया!! मर गया!!!

मन्दिर की ड्योढ़ी से टकरा कर कमला गिर पड़ी। मूर्ति टूट गई। मूर्ति का टूटा हुआ सिर संतोष के हाथों में जा पड़ा।

रात्रि के भीषण अंधकार में एक चिता जली। दो प्रेमियों के प्रेम से जलती हुई वह ज्वाला अंधकार में भूले हुओं को सीधा मार्ग दिखाने के लिये।

